

देश विदेश की लोक कथाएँ — एक कहानी कई रंग-18 :



सिपाही और मौत जैसी कहानियाँ



संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Sipahi Aur Maut Jaisi Kahaniyan-18 (Soldier and Death Like Stories-18)

Cover Page picture : Soldier

Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com

Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018

No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World



विंडसर, कॅनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका	4
सिपाही और मौत जैसी कहानियाँ	5
1 सिपाही और मौत	7
2 ताश खेलने वाला	26
3 ताश खेलने वाला	31
4 बोतल में बन्द मौत	50
5 आज्ञा मेरे थैले में कूद जा	55

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाएँ किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाएँ हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाएँ केवल ज़बानी ही कही जाती थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाएँ अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाएँ हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाएँ तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाएँ हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाएँ यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी हैं पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याएँ आयी हैं जिनमें से दो समस्याएँ मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया है ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाएँ “देश विदेश की लोक कथाएँ” नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छपी जा रही हैं। ये लोक कथाएँ आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता

मई 2018

सिपाही और मौत जैसी कहानियाँ

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है “एक कहानी कई रंग”। इसमें वे कथाएँ शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं।

बच्चों जैसे तुम लोग कहानियाँ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहाँ के बच्चे कहानियाँ सुनते हैं। क्योंकि कहानियाँ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियाँ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

पर कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जो भिन्न भिन्न देशों में कही सुनी जाती हैं पर सुनने में एक सी लगती हैं। यहाँ कुछ ऐसी ही कहानियाँ दी जा रही हैं। ये सब कहानियाँ कुछ इस तरह से चुनी गयीं हैं कि ये सब कहानियाँ एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं। ऐसी कहानियाँ हम “एक कहानी कई रंग” की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियाँ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी “एक कहानी कई रंग” की सीरीज़ में, इससे पहले हम दस पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

इन कहानियों की सीरीज़ में सबसे पहली पुस्तक थी “विल्ला और चुहिया जैसी कहानियाँ”। “एक कहानी कई रंग-1” में “विल्ला और चुहिया” जैसी कहानियाँ थीं।¹ इसकी दूसरी पुस्तक में “टौम थम्ब” जैसी कहानियाँ दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाएँ हैं।²

फिर इस सीरीज़ में अभी तक कुल 17 पुस्तकें प्रकाशित की गयीं हैं जिनकी सूची इस पुस्तक के पीछे दी हुई है। अब यह प्रस्तुत है इस सीरीज़ की 18वीं पुस्तक “सिपाही और मौत” जैसी कहानियाँ। सिपाही और मौत रूस की एक बहुत ही लोकप्रिय कथा है पर कुछ कुछ वैसी ही कथाएँ और जगहों पर भी कही सुनी जाती हैं।

इन कहानियों में एक आदमी जो जीसस या किसी और दैवीय ताकत की सहायता से मौत को पकड़ लेता है वह उसको किसी थैले में बन्द कर लेता है या फिर किसी और चीज़ की सहायता से जैसे ताश आदि की सहायता से किसी और चीज़ में बन्द कर लेता है। मौत को पकड़ना आसान नहीं है पर जब वह पकड़ में आ जाती है तब क्या होता है...

तो लो पढ़ो सिपाही और मौत कथा और वैसी ही कुछ और लोक कथाएँ...

¹ “One Story Many Colors-1” – like “Cat and Rat”

² “One Story Many Colors-2” – like “Tom Thumb”

1 सिपाही और मौत³

एक बार की बात है कि एक सिपाही था जिसने भगवान और राजा दोनों की पूरे पच्चीस साल तक सेवा की थी और आखिर में उसने केवल तीन बिस्किट कमाये थे। अब वह घर लौट रहा था।

जब वह जा रहा था तो सोचता जा रहा था “भगवान देखो मैं यहाँ हूँ। मैंने ज़ार की पच्चीस साल तक सेवा की। वहाँ से मुझे खाना और कपड़ा मिलता रहा। पर आखिर मैं किस चीज़ के लिये ज़िन्दा रहा? मैं ठंडा हूँ और भूखा हूँ। खाने के लिये मेरे पास केवल तीन बिस्किट हैं।”

इसी तरह से वह सोचता चला आ रहा था कि उसको लगा कि वह वह जगह छोड़ कर कहीं और चला जाये जहाँ भी उसकी किस्मत उसे ले जाये।

चलते चलते उसे एक बहुत ही गरीब भिखारी मिला। उसने उससे भीख माँगी तो उसने उसे एक बिस्किट दे दिया। वह और आगे चला तो उसको एक और गरीब भिखारी मिला। उसने उसको बहुत नीचे तक सिर झुकाया और उससे भीख माँगी तो उसने उसको

³ The Soldier and Death – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book :

“Russian Folk-Tales”, by Alexander Nikolayevich Afanasief. This book is available at :

https://books.google.ca/books?id=QssdAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

This story is taken from the Web Site :

https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales/The_Soldier_and_Death

This story is very famous story of Russia.

भी एक बिस्किट दे दिया। अब उसके पास केवल एक बिस्किट ही बचा था।

वह और आगे चला तो उसको एक तीसरा भिखारी मिला। उसने भी उसको नीचे तक झुक कर नमस्ते की और भीख माँगी।

सिपाही ने अपना आखिरी तीसरा बिस्किट निकाला और सोचा “अगर मैं इसको यह सारा बिस्किट दे देता हूँ तो मेरे पास तो कुछ रह ही नहीं जायेगा। और अगर मैं इसको आधा बिस्किट देता हूँ तो जब यह अपने दूसरे साथी भिखारियों से मिलेगा तो देखेगा कि उनके पास तो पूरे पूरे बिस्किट हैं तो इसको बुरा लगेगा।

इससे अच्छा तो यही है कि मैं इसे भी पूरा बिस्किट ही दे दूँ। मैं अपना गुजारा किसी और तरह कर लूँगा।”

सो उसने उसको अपना तीसरा आखिरी बिस्किट निकाला और उसे दे दिया और अब उसके पास कुछ भी नहीं बचा था।

बिस्किट ले कर उस बूढ़े ने उससे पूछा — “ओ भले आदमी। बता तेरी क्या इच्छा है? तुझे क्या चाहिये? मैं तेरी सहायता करूँगा।”

सिपाही बोला — “भगवान तुम्हारा भला करे। मैं तुमसे कोई चीज़ कैसे ले सकता हूँ। तुम तो वैसे ही बूढ़े और गरीब हो।”

बूढ़ा बोला — “तू मेरी गरीबी के बारे में सोचना छोड़। बस तू मुझे यह बता दे कि तुझे क्या चाहिये और मैं तेरी अच्छाई के मुताबिक तुझे वही चीज़ दे दूँगा।”

सिपाही बोला — “मुझे कुछ नहीं चाहिये । अगर तुम्हारे पास ताश हों तो बस मुझे रखने के लिये एक जोड़ी ताश दे दो ।”

अब यह बूढ़ा तो जीसस काइस्ट था जो एक बूढ़े का रूप रखे धरती पर घूम रहा था । बूढ़े ने अपनी छाती वाली जेब में हाथ डाला ताश की एक गड्डी निकाली और उसको देते हुए कहा — “लो यह लो । इन ताशों के साथ तुम जिस किसी के साथ भी खेलोगे तुम वह बाजी जीत जाओगे ।

और लो यह एक थैला लो । जो भी तुम्हें रास्ते में मिलेगा चाहे वह जंगली जानवर हो या चिड़िया हो जिसको भी तुम पकड़ना चाहोगे बस इस थैले से यह कहना “ओ चिड़िया या जानवर आ मेरे थैले में कूद जा ।” और तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी ।”

सिपाही ने उसे धन्यवाद कहा और उससे ताश की गड्डी और थैला ले कर आगे चला । वह चलता गया चलता गया और चलता गया, शायद पास शायद दूर, शायद कुछ देर या फिर शायद बहुत देर कि वह एक झील के पास आ पहुँचा । उस झील में तीन जंगली बतखें तैर रही थीं ।

अचानक सिपाही को उस बूढ़े भिखारी के दिये हुए थैले की याद आ गयी तो उसने सोचा कि “क्यों न मैं इस थैले को यहीं जाँच कर देख लूँ ।”

उसने उसे निकाला खोला और बोला — “ओ जंगली बतखों मेरे थैले में कूद जाओ ।” जैसे ही उसके मुँह से ये शब्द निकले

तुरन्त ही तीनों बतखें झील से आ कर उसके थैले में गिर गयीं। सिपाही ने अपना थैला बन्द किया और फिर अपने रास्ते चल दिया।

चलते चलते अब वह एक शहर में आ पहुँचा। वहाँ वह एक खाने की जगह गया और वहाँ आ कर उसने सराय के मालिक को एक बतख दी और उससे कहा कि वह उसे उसके लिये खाने में बना दे। “इसकी मजदूरी में मैं तुम्हें एक और बतख दूँगा। और यह तीसरी बतख लो और इसके बदले में मुझे वोदका⁴ दे दो।”

इस तरह से सिपाही उस सराय में एक लौर्ड की तरह बैठा। आराम से खाया पिया और भुनी हुई बतख की दावत खायी। अचानक उसको लगा कि वह खिड़की के बाहर झाँक कर देखे।

सो उसने जब उधर देखा तो देखा कि उधर तो एक बहुत बड़ा महल खड़ा हुआ था पर उसका कोई भी शीशा साबुत नहीं था। यह देख कर उसने सराय के मालिक से पूछा — “यह क्या बात है। यह कैसा महल है। यह इतना खाली खाली क्यों है?”

सराय का मालिक बोला — “अरे आपको नहीं पता? हमारे ज़ार ने यह महल अपने लिये बनवाया था पर वे इसमें रह ही नहीं सके। अब सात साल से यह ऐसे ही खाली पड़ा हुआ है। कुछ शैतानी आत्माएँ इसमें इसमें रहने वाले को बाहर जाने पर मजबूर कर देती हैं। वे इसमें किसी को रहने ही नहीं देतीं।

⁴ Vodka is a Russian liquor.

हर रात यहाँ कुछ शैतानों की मीटिंग होती है। वे लड़ते हैं झगड़ते हैं नाचते हैं ताश खेलते हैं और हर तरह का बुरा काम करते हैं।”

सो सिपाही वहाँ से उठ कर ज़ार के पास गया और बोला — “योर मैजेस्टी। अगर आपको बुरा न लगे तो मैं एक रात आपके खाली महल में गुजार लूँ।”

ज़ार बोला — “भगवान तुम्हें सुखी रखे। क्या बात कर रहे हो भाई। तुम्हारा मतलब क्या है। तुम्हारे जैसे कई हिम्मत वाले लोगों ने वहाँ रात गुजारने की कोशिश की है पर अभी तक वहाँ से कोई बच कर नहीं आ सका है।”

सिपाही बोला — “योर मैजेस्टी। एक रूसी सिपाही पानी में डूब नहीं सकता आग में जल नहीं सकता। मैंने भगवान और सरकार की पच्चीस साल सेवा की है और उसकी वजह से कभी मरा नहीं। और अब एक रात आपकी नौकरी कर लूँगा तो क्या मैं मर जाऊँगा? नहीं कभी नहीं।”

ज़ार फिर बोला — “फिर भी मैं तुमसे कहे देता हूँ कि जो कोई भी आदमी रात को उस महल में जाता है सुबह को उसकी हड्डियाँ ही मिलती हैं।”

पर सिपाही अपने इरादे का पक्का था बस उसको ज़ार के महल में जाने की इजाज़त चाहिये। ज़ार ने कहा “ठीक है अगर तुम जाना चाहते हो तो जाओ। भगवान तुम्हारी रक्षा करें। तुम वहाँ रात को

रहना अगर तुम वहाँ रात को रह लिये तो तुम आजाद हो मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा।”

सो सिपाही महल में घुसा और एक बड़े से कमरे में जा कर बैठ गया। उसने अपना थैला और अपनी तलवार निकाल कर रख दी। थैला एक कोने में रख दिया और तलवार एक खूँटी पर टाँग दी।



फिर वह एक कुरसी पर बैठ गया। अपनी जेब में से तम्बाकू निकाला अपना पाइप सुलगाया और आराम से उसमें से धुँआ छोड़ने लगा।

करीब करीब आधी रात को हमें पता नहीं कहाँ से कई शैतान वहाँ आ गये। कुछ उनमें से दिखायी दे रहे थे कुछ दिखायी नहीं दे रहे थे। वहाँ आ कर उन्होंने खूब हल्ला गुल्ला मचाया। फिर वे जंगली संगीत पर खूब नाचे।

फिर वे चिल्लाये — “अरे तुम्हारी क्या छुट्टी कर दी गयी है। क्या तुम हमारे साथ ताश खेलोगे?”

सिपाही बोला — “हाँ हाँ क्यों नहीं। लो ये रहे ताश। आओ शुरू करते हैं।” कह कर उसने अपनी जेब से ताश निकाल कर बाँट दिये।

ताश का खेल शुरू हुआ। एक बाजी खेली गयी तो सिपाही जीत गया। दूसरी बाजी खेली गयी पर फिर वही हुआ। सिपाही जीत गया। शैतानों की कोई भी चाल उनको जिता न सकी।

सिपाही सारे पैसे जीतता चला गया। उसने उनके सारे पैसे समेट लिये।

शैतान बोले — “ओ सिपाही रुक जाओ। हमारे पास अभी भी 60 औंस चाँदी और 40 औंस सोना बाकी है। हम उसे आखिरी बाजी पर लगायेंगे।” कह कर उन्होंने एक शैतान लड़के को चाँदी लाने के लिये भेज दिया।

अब एक नया खेल शुरू हुआ। उस शैतान लड़के ने इधर उधर खूब ताक झाँक की और फिर वापस आ कर बड़े शैतान को बताया “बाबा कोई फायदा नहीं है। अब हमारे पास कुछ नहीं है।”

बाबा ने शैतान लड़के से कहा — “तू जा और जा कर सोना लेकर आ।”

लड़का चला गया और सब जगह सोना ढूँढने लगा। एक गड्ढा पूरा का पूरा खाली कर दिया पर फिर भी वहाँ उसको कुछ भी नहीं मिला। सिपाही ने उनका सब कुछ जीत लिया था।

शैतान लोग इस तरह से अपना सारा पैसा गँवाने पर बहुत गुस्सा थे सो उन्होंने सिपाही को पीटना शुरू कर दिया और चिल्लाये — “इसको कुचल दो भाइयो इसको खा लो।”

यह सुन कर सिपाही बोला — “देखते हैं कि जब खाने की बात आती है तो किसकी बात जीतती है।” कह कर उसने अपना थैला खोल दिया और उनसे पूछा “यह क्या है?”

वे बोले “यह तो एक थैला है।”

“भगवान के जादू से तुम सब इसमें चले जाओ।”

यह कहते ही सारे शैतान उसमें आ कर गिर गये।

वे इतने सारे थे कि तुम उन्हें गिन भी नहीं सकते। सिपाही ने वह थैला कस कर बन्द किया उसे एक खूटी पर लटकाया और सोने के लिये लेट गया।

सुबह को ज़ार ने अपनो लोगों को बुलवाया और उनसे कहा —

“मेरे पास आओ और मुझे यह देख कर बताओ कि वह सिपाही कैसा कर रहा है। अगर शैतानों ने उसे खा लिया है तो कम से कम मुझे उसकी हड्डियाँ ही ला कर दो।”

वे तुरन्त ही महल गये तो उन्होंने देखा कि सिपाही तो अपना पाइप पीता हुआ खुश खुश इधर उधर घूम रहा है। उन्होंने उससे पूछा — “सिपाही कैसे हो तुम? हम तो तुम्हें यहाँ ज़िन्दा देखने की आशा ही नहीं कर रहे थे। तुम्हारी रात कैसी गुजरी? शैतानों से तुमने कैसा सौदा किया?”

सिपाही बोला — “कौन से शैतान। आओ और अन्दर आ कर देखो मेरे पास कितना सोना चाँदी है। मैंने उन सबको हरा दिया। देखो कितना बड़ा ढेर है यह।”

ज़ार के नौकरों ने जब उसे देखा तो वे तो बहुत आश्चर्य में पड़ गये। सिपाही ने उनसे कहा कि वह उसको दो सोने चाँदी का काम करने वाले सुनार ला कर दें। अपने साथ में वे एक लोहे का हथौड़ा और दूसरे औजार भी ले कर आयें।

वे जल्दी जल्दी भागे भागे सुनार के पास गये और दो सुनारों को लोहे के हथौड़ों और दूसरे औजारों को साथ ले कर तुरन्त ही हाजिर हो गये।

सिपाही बोला — “यह थैला लो और इसको पुराने तरीके से ठोक ठोक कर अच्छी तरह पीटो।”

सुनारों ने उससे वह थैला लिया और आपस में बात की — “उफ़ यह थैला कितना भारी है। इसके अन्दर तो शैतान होने चाहिये।”

तुरन्त ही उसके अन्दर से शैतान चीखे — “ओ हमारे बाप हॉ हॉ हम ही हैं। हमारी सहायता करो।”

बहुत जल्दी ही शैतानों को पता चल गया कि वे इस तरह का व्यवहार सहन नहीं कर सकते थे सो उन्होंने चिल्लाना शुरू किया — “हमारे ऊपर दया करो। हमको बाहर निकालो ओ सिपाही हमको खुली हवा में साँस लेने दो।

इस दुनियाँ के आखीर तक हम तुम्हें नहीं भूलेंगे और इस महल के अन्दर भी अबसे कोई शैतान नहीं घुसेगा। हम सबको इसमें घुसने से मना कर देंगे - सबको मानी सबको। हम सबको वहाँ से 100 वर्स्ट⁵ दूर रखेंगे।”

⁵ Verst is a Russian measure of length. 1 Verst = .66 mile (1.1 Kms)

यह सुन कर सिपाही ने सुनारों को उनको पीटने से रोक दिया। और जैसे ही उसने थैला खोला सारे शैतान बिना पीछे देखे हुए दौड़ कर वहाँ से नरक भाग गये।

पर सिपाही कोई बेवकूफ नहीं था। जैसे ही वे बाहर निकल कर भाग रहे थे उसने एक बड़े शैतान को उसके पंजों से पकड़ लिया और बोला — “यहाँ आओ। तुम मुझे लिख कर दो कि तुम मेरी हमेशा वफादारी के साथ सेवा करोगे।”

उस शैतानी आत्मा ने उसे अपने खून से यह लिख कर दे दिया और वहाँ से भाग गया।

अपनी पूरी ताकत के साथ सारे शैतान बड़े भी छोटे भी सब एक जलते हुए गड्ढे में चले गये पर उसके बाद उन्होंने अपने उस जलते हुए गड्ढे के चारों तरफ पहरा लगा दिया और उनको कड़ी हिदायत दे दी कि वे सावधानी से वहाँ पहरा दें ताकि वह सिपाही और उसका थैला वहाँ कहीं आस पास भी दिखायी न दें।

यह सब करके सिपाही और ज़ार के नौकर लोग ज़ार के पास आये और सिपाही ने उसको कोई कहानी बतायी कि कैसे वह महल शैतानों से आजाद हुआ।

ज़ार ने सिपाही को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा — “तुम मेरे पास ही रहो। मैं तुम्हें अपने भाई की तरह से रखूँगा।”

सो वह सिपाही अब ज़ार के पास ही रहने लगा। अब उसके पास हर चीज़ बहुतायत में थी। अब तो वह अमीरी में लोट रहा था

सो अब उसने सोचा कि अब उसको शादी कर लेनी चाहिये। सो उसने शादी कर ली और भगवान की कृपा से एक साल बाद उसके एक बेटा भी हो गया।

इत्तफाक की बात कि इसके बेटे को बहुत बुरी बीमारी लग गयी – इतनी भयानक कि कोई डाक्टर उसे ठीक नहीं कर सका। वह बीमारी किसी भी डाक्टर की जानकारी में नहीं थी।

तो सिपाही को उस बड़े शैतान का ध्यान आया और उस समझौते के साथ जो उसने उसके साथ किया था कि “मैं हमेशा तुम्हारी वफादारी से सेवा करूँगा।” उसने उसके बारे में सोचा और कहा “मेरा बड़ा शैतान क्या कर रहा है?”

उसके याद करते ही वही बड़ा शैतान वहाँ उसके सामने आ खड़ा हुआ और पूछा — “सरकार आपकी क्या इच्छा है?”

सिपाही बोला — “मेरा छोटा सा बच्चा बहुत बीमार है। क्या तुम जानते हो कि वह कैसे ठीक हो सकता है?”

शैतान ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक गिलास निकाला। उसमें उसने ठंडा पानी डाला और बीमार बच्चे के सिर पर रख दिया और सिपाही से कहा — “यहाँ आओ। इस पानी में देखो।”

सिपाही ने उस पानी में देखा तो शैतान ने पूछा “तुम इसमें क्या देखते हो।”

सिपाही बोला — “मैं यह देख रहा हूँ कि मेरे बेटे के पैरों के पास मौत खड़ी है।”

शैतान बोला — “क्योंकि मौत इसके पैरों के पास खड़ी है इसलिये यह बच जायेगा। अगर मौत इसके सिर पर खड़ी होती तो यह एक दिन भी ज़िन्दा नहीं रहता।”

सो शैतान ने पानी का वह गिलास लिया और उसका पानी सिपाही के बेटे के ऊपर डाल दिया। उसका बेटा उसी समय ठीक हो गया।

सिपाही बोला — “तुम यह गिलास मुझे दे दो फिर मैं तुम्हें किसी भी बात के लिये परेशान नहीं करूँगा।” शैतान ने उसको गिलास दे दिया और सिपाही ने उसे समझौते वाला कागज दे दिया। शैतान वहाँ से चला गया।

अब सिपाही को जादू आ गया तो वह बड़े बड़े लोगों को ठीक करने लगा। वह उनके पास जाता गिलास उनके सिर पर रखता और तुरन्त ही जान लेता कि वह आदमी मरेगा या बचेगा।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि ज़ार खुद बीमार हो गया तो सिपाही को बुलवाया गया। सो उसने गिलास में ठंडा पानी भरा और ज़ार के सिर के ऊपर रखा तो देखा कि मौत तो ज़ार के सिर पर खड़ी है।

सिपाही बोला — “योर मैजेस्टी। इस दुनियाँ में कोई ऐसा नहीं है जो आपको ठीक कर सके। मौत आपके सिर पर खड़ी है और अब आपके पास केवल तीन घंटे की ज़िन्दगी ही बची है।”

जब ज़ार ने यह सुना कि उसके पास केवल तीन घंटे की ज़िन्दगी है तो वह सिपाही पर बहुत गुस्सा हो गया।

वह उस पर चिल्ला कर बोला “क्या क्या? तुमने कितने सारे लोगों को ठीक किया है और तुम मेरे लिये कुछ नहीं कर सकते। क्या तुम जानते हो कि मैं तुम्हें अभी इसी वक्त मरवा सकता हूँ।”

सो सिपाही ने सोचा और सोचा और सोचा कि उसे क्या करना चाहिये। बहुत सोचने के बाद उसने मौत को ललकारा — “ओ मौत तू ज़ार को मेरी ज़िन्दगी दे दे और उनकी बजाय मुझे ले ले। क्योंकि अब मेरे लिये यह कोई मायने नहीं रखता कि मैं मरूँ या जियूँ। क्योंकि बजाय यह बेरहम सजा भुगतने के मेरे लिये वही ज्यादा अच्छा होगा कि मैं अपनी मौत मरूँ।”

यह कह कर उसने फिर से गिलास में देखा तो देखा कि मौत ज़ार के पैरों के पास खड़ी हुई है। फिर उसने गिलास का पानी लिया और ज़ार के ऊपर छिड़क दिया। ज़ार बिल्कुल ठीक हो गया।

यह करके सिपाही बोला — “अब ओ मौत। तू मुझे तीन घंटे की मोहलत दे ताकि मैं अपने घर जा सकूँ और अपनी पत्नी और बेटे से विदा ले सकूँ।”

मौत बोली — “ठीक है जा तुझे तीन घंटे दिये।”

घर पहुँच कर सिपाही अपने बिस्तर पर लेट गया और बीमार पड़ गया और जब मौत उसके बिल्कुल पास खड़ी थी तो उसने

सिपाही से कहा — “ओ सिपाही तू अब अपने परिवार से विदा कह ले। इस दुनियाँ में रहने के लिये तेरे पास अब केवल तीन मिनट बचे हैं।”

यह सुन कर सिपाही ने अपने तकिये के नीचे से अपना थैला निकाला उसे खोला और उससे पूछा “यह क्या है?”

मौत बोली “एक थैला।”

सिपाही तुरन्त बोला — “अगर यह एक थैला है तो आज्ञा इसमें कूद जा।” और मौत तुरन्त ही उस थैले में चली गयी।

सिपाही तो बीमार था फिर भी वह अपने बिस्तर से कूद कर उठ गया। थैले को कस कर बन्द किया अपने कन्धे पर डाला और ब्रियान्स्की⁶ जंगल चल दिया। यह सबसे घना जंगल था। वहाँ ले जा कर उसने उस थैले को एक ऐस्पन के पेड़ पर टाँग दिया उसकी सबसे ऊँची शाख पर टाँग दिया और घर चला गया।

उस दिन के बाद से दुनियाँ में कोई नहीं मरा। लोग पैदा तो होते थे और पैदा होते भी रहे पर वे मरे कभी नहीं। इस तरह से कई साल बीत गये। सिपाही ने अपना वह थैला वहाँ से नहीं उतारा।

एक दिन वह शहर गया तो उसको वहाँ एक बहुत ही बूढ़ी औरत मिली। वह इतनी बुढ़िया थी कि जिस तरफ भी हवा चलती थी वह उधर ही को झुक जाती थी। सिपाही के मुँह से निकला

⁶ Bryanski Woods

“ओह यह कितनी बूढ़ी है। यह अभी तक ज़िन्दा है अब तो इसके मरने का भी समय आ गया।”

बुढ़िया बोली — हाँ। मेरे मरने का समय आया था पर उस बात को तो बहुत दिन बीत गये अब तो वह चला भी गया। उस समय जब तुमने मौत को अपने थैले में बन्द किया था मेरी ज़िन्दगी का केवल एक घंटा रह गया था।

मैं कुछ आराम पा कर बहुत खुश होती। पर जब तक मैं मरूँगी नहीं तब तक यह जमीन भी मुझे नहीं लेगी और ओ सिपाही तू भगवान की नजरों में पापी ठहराया जायेगा। क्योंकि इस धरती पर कोई भी ऐसा आदमी इतना दुखी नहीं है जितनी कि मैं।”

सिपाही वहीं रुक गया और सोचने लगा “यह ज़्यादा अच्छा होगा अगर मैं मौत को बाहर निकाल दूँ। हो सकता है कि मैं भी मर जाऊँ। इसके अलावा मेरी आत्मा पर बहुत सारे पाप भी तो हैं।

इसलिये जब तक मैं ताकतवर हूँ मेरे लिये यही ज़्यादा अच्छा रहेगा कि मैं इस धरती पर रहते हुए उनका बोझ सहूँ। क्योंकि जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा तब तो मेरे लिये किसी दुख को सहना और भी मुश्किल हो जायेगा।”

सो वह वहाँ से ब्रियान्स्की जंगल पहुँचा और उसी ऐस्पन के पेड़ के पास पहुँचा जहाँ उसने अपना थैला लटकाया था। उसने देखा कि उसका थैला तो उस पेड़ पर बहुत ऊँचा लटका हुआ था। चारों

तरफ से हवा उसको अपने थपेड़ों से बहुत ज़ोर ज़ोर से हिला रही थी।

उसने पूछा — “ओ मौत क्या तुम अभी तक ज़िन्दा हो?”

थैले में से एक बहुत ही धीमी सी आवाज आयी “हाँ पिता जी मैं अभी भी ज़िन्दा हूँ।”

सो सिपाही ने उस थैले को उतारा उसे खोला और उसमें से मौत को बाहर निकाल दिया। वह खुद अपने बिस्तर पर लेट गया। उसने अपनी पत्नी और बेटे को विदा कहा और फिर मौत से प्रार्थना की कि वह उसको अपने अन्दर समेट ले।

पर वह तो अपने पैरों की पूरी ताकत के साथ बाहर की तरफ यह कहती हुई भाग गयी “जाओ तुमको तो शैतान ही मारेंगे। मैं तुम्हें नहीं मारूँगी।”

इस तरह सिपाही ज़िन्दा रहा और तन्दुरुस्त रहा। फिर उसने सोचा कि “क्या मैं खुद ही उस जलते हुए गड्ढे की तरफ जाऊँ क्योंकि तब वे शैतान मुझे गन्धक में फेंक देंगे जब तक मेरे पाप पिघल कर न वह जायें।”

सो उसने फिर से सबसे विदा ली अपना थैला उठाया और सीधा जलते हुए गड्ढे की तरफ चल दिया। वह चलता गया चलता गया, शायद पास शायद दूर, शायद पहाड़ी पर चढ़ता हुआ या फिर पहाड़ी से उतरता हुआ, शायद थोड़ी देर तक या फिर ज़्यादा देर तक।

अन्त में वह ऐबिस⁷ तक आ पहुँचा। उसने देखा कि वहाँ उसके चारों तरफ तो बहुत सारे पहरेदार खड़े हैं। जब वह उसके फाटक पर पहुँचा तो एक शैतान ने पूछा “कौन आ रहा है?”

“एक अपराधी आत्मा दुख पाने के लिये।”

“तुम यहाँ क्यों आये हो? और तुम्हारे पास यह क्या है?”

“एक थैला।”

यह सुने ही शैतान अपनी पूरी ताकत से चीखा जिसने आस पास की जगह को हिला कर रख दिया। सारी शैतानी आत्माएँ खड़े हो कर अपने न टूटने वाली चटकनियों वाली खिड़कियों से फाटक के बाहर झाँकने लगीं।

सिपाही ने उस जलते हुए गड्ढे का एक चक्कर लगाया और उस गड्ढे के मालिक को पुकारा — “मेहरबानी करके मुझे अन्दर घुसा लो। मैं तुम्हारे पास अपने पापों की सजा भुगतने के लिये आया हूँ।”

“नहीं मैं तुम्हें अन्दर नहीं आने दूँगा। तुम्हारी जहाँ इच्छा हो वहाँ चले जाओ। यहाँ तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं है।”

“ठीक है अगर तुम मुझे सजा नहीं भुगतने देते तो कम से कम मुझे तुम 200 आत्माएँ ही दे दो। मैं उनको भगवान के पास ले जाऊँगा। तब भगवान शायद मेरे पापों को माफ कर दें।”

⁷ Abyss – a deep or seemingly bottomless chasm

गड्ढे के मालिक ने कहा — “मैं तुम्हें 50 आत्माएँ और दूगा बस तुम यहाँ से चले जाओ।”

उसने 250 आत्माएँ गिन कर उनको अपने पिछले दरवाजे से उस सिपाही को देने का हुकुम दिया ताकि वह उसे देख न सके। सिपाही ने वे 250 अपराधी आत्माएँ इकट्ठी कीं और उनको ले कर वह स्वर्ग के दरवाजे पर पहुँचा।

अपोसिल्स⁸ ने उसको देखा और जीसस से कहा — “एक सिपाही या कोई और नरक की 250 आत्माओं के साथ यहाँ आया हुआ है।”

जीसस ने कहा — “उन आत्माओं को स्वर्ग में ले जाओ पर उस सिपाही को वहाँ मत ले जाना।”

पर सिपाही ने अपना थैला एक अपराधी आत्मा को दे रखा था और उससे कह रखा था — “तुम यहाँ देखते रहना। जैसे ही तुम स्वर्ग में घुसो वैसे ही तुम कहना “ओ सिपाही थैले के अन्दर कूद जाओ।”

स्वर्ग के दरवाजे खुले और उन आत्माओं ने स्वर्ग में घुसना शुरू किया। यह अपराधी आत्मा भी अन्दर गयी जिसके हाथ में सिपाही का थैला था पर स्वर्ग जाने की खुशी में वह सिपाही को उस थैले के अन्दर रखना भूल गया।

⁸ Jesus had 12 disciples. Those 12 disciples were called Apostles.

इस तरह से सिपाही बाहर ही पीछे छूट गया और दोनों में से किसी भी जगह अपना घर नहीं पा सका। वह बहुत दिनों तक ऐसे ही इधर उधर घूमता रहा क्योंकि उसको अभी और भी रहना था। बहुत दिनों बाद जा कर वह मरा।



2 ताश खेलने वाला⁹

सिपाही और मौत जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के यूनान देश की लोक कथाओं से ली है। यह भी एक बहुत ही मजेदार लोक कथा है।

एक बार एक आदमी था जो ताश खेलने का बहुत शौकीन था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — “एक दिन काइस्ट को दोपहर का खाना खिलाने के लिये बुलाओ।”

उसकी पत्नी ने काइस्ट को खाने का न्यौता भेजा। काइस्ट ने कहा “ठीक है मैं आऊँगा।” सो दोपहर को काइस्ट अपने सारे शिष्यों के साथ ताश खेलने वाले के घर खाना खाने आये।

जब ताश खेलने वाले की पत्नी ने इतने सारे लोग देखे तो वह बोली — “मेरे पास इतनी सारी रोटी तो नहीं है।”

काइस्ट बोले — “मेरा खयाल है कि होगी। यह देखो मेरे पास यह रोटी है आज हम यही खायेंगे।”

खाने की मेज लगायी गयी और वे सब खाना खाने बैठे। काइस्ट ने रोटी को आशीर्वाद दिया और सबने खाना खाया। वह रोटी काफी ही नहीं बल्कि जरूरत से भी ज्यादा थी।

⁹ The Cardplayer – a folktale from Greece, Europe. Translated by Nick Nicholas.
Adapted from the Web Site <http://mw.lojban.org/papri/cardplayer>

खाना खाने के बाद काइस्ट ने शराब पी और ताश खेलने वाले से पूछा कि वह काइस्ट से क्या चाहता था। काइस्ट के शिष्यों ने उसको सलाह दी कि वह उनसे स्वर्ग का राज्य माँग ले।



पर ताश खेलने वाले ने कहा — “मेरे घर में एक सेब का पेड़ है। मेरे घर बहुत सारे लोग आते हैं और उस पेड़ से वे सेब तोड़ कर ले जाते हैं। सो मैं यह चाहता हूँ कि जो कोई भी इस पेड़ से सेब तोड़े वह इससे चिपक जाये और जब तक मैं उसे न छुड़ाऊँ वह उस पेड़ से न छूटे।”

काइस्ट बोले — “जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।”

काइस्ट ने शराब का दूसरा प्याला पिया और फिर पूछा — “बोलो तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या और दूँ?”

काइस्ट के शिष्यों ने उससे फिर कहा स्वर्ग का राज्य माँग लो पर वह फिर बोला — “नहीं, अबकी बार मैं आपसे यह माँगता हूँ कि मैं जब भी ताश खेलूँ तो बस मैं ही जीतूँ।”

काइस्ट बोले — “जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।”

काइस्ट ने शराब का तीसरा प्याला पिया और फिर पूछा — “अब तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या दूँ?”

इस बार उसने कहा — “स्वर्ग का राज्य।”

काइस्ट बोले — “जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।”

क्राइस्ट यह कह कर वहाँ से चले गये और वह आदमी ताश खेलने चला गया। अब क्या था वह आदमी तो क्राइस्ट के वरदान से जिसके साथ भी ताश खेलता था उसी को जीत लेता था।

कुछ समय बाद क्राइस्ट को तो सूली पर चढ़ा¹⁰ दिया गया और वह आदमी ताश खेलता रहा।

जब क्राइस्ट स्वर्ग के राज्य में पहुँचे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये एक देवदूत¹¹ भेजा। वह देवदूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले से कहा — “तुम अब काफी खेल चुके अब तुम्हारी ज़िन्दगी खत्म। चलो स्वर्ग चलो।”

ताश खेलने वाला बोला — “ठीक है। मैं चलता हूँ। तब तक तुम इस सेब के पेड़ से थोड़े से सेब खाओ और बस मैं तुम्हारे साथ अभी चलता हूँ।”

वह देवदूत उस पेड़ से सेब तोड़ने गया पर जैसे ही उसने उस पेड़ को छुआ वह उससे चिपक गया। उसने ताश खेलने वाले से कहा कि वह उसको उस पेड़ से छुड़ा ले।

ताश खेलने वाले ने कहा — “ठीक है मैं तुमको छुड़ाने आता हूँ पर जब मैं चाहूँगा तभी आऊँगा उससे पहले नहीं।” और यह कह कर वह इधर उधर घूमता रहा।

¹⁰ Translated for the word “Crucified”.

¹¹ Translated for the word “Angel”

जब वह इधर उधर घूमते घूमते थक गया तब वह देवदूत के पास आया और बोला — “मैं अब तुमको इस पेड़ से छुड़ाता हूँ और तुम्हारे साथ चलता हूँ।” कह कर उसने देवदूत को उस पेड़ से छुड़ाया और उसके साथ चल दिया।

रास्ते में नरक पड़ा। वहाँ हैडेस¹² अपने बारह छोटे साथियों के साथ बैठा था तो ताश खेलने वाला उससे बोला — “मैं तुमसे ताश की एक बाजी खेलना चाहता हूँ।

अगर मैं हार गया तो मैं तुम्हारे पास हमेशा के लिये रह जाऊँगा और अगर तुम हार गये तो तुम मुझे अपने ये बारह छोटे साथी दे देना।”

हैडेस राजी हो गया और उसने ताश खेलना शुरू कर दिया। अब काइस्ट के वरदान के साथ उससे कोई जीत तो सकता नहीं था सो वह जीत गया और हैडेस से वह उसके बारह छोटे साथी ले कर चल दिया।

अब वह स्वर्ग आया। जब काइस्ट ने उस आदमी के साथ दूसरे लोगों को आते देखा तो उस आदमी से कहा — “मैंने तो केवल तुमको ही आने को कहा था पर तुम तो बहुत सारे लोगों को अपने साथ ले आये हो।”

¹² Hades is the Devil

वह आदमी बोला — “मैंने भी तो खाने के लिये केवल आपको ही बुलाया था और आप तेरह लोग मेरे घर आये थे। मैं भी अपने साथ बारह लोगों को ले कर आया हूँ।”

यह सुन कर काइस्ट ने सारे तेरह लोगों को स्वर्ग में आने की इजाज़त दे दी।



3 ताश खेलने वाला¹³

एक बार एक आदमी था जिसको लोग ताश खेलने वाला कहते थे और यही वह करता भी था। वह कहीं भी जाता था तो उसकी जेब में ताश रहते थे और वह हर एक को हरा देता था।

वह सड़क पर से किसी को भी पकड़ लेता था – बच्चा या कोई भी, और उससे कहता कि “आओ ताश खेलें।”

वह हमेशा पैसे के लिये ताश खेलता था। कोई बच्चा भी जो किसी दूकान पर जाता तो वह उसको बुला लेता। क्योंकि उसके पास पैसे होते थे सो वह उसके साथ खेलता और वह तुरन्त ही हार जाता।

उसका एक छोटा सा घर था और उसमें उसका एक छोटा सा रसोईघर था। वहाँ वह अपने हाथ से ही खाना बनाता था। उसके पास एक बरतन था। उस बरतन में छह-सात लोगों का खाना बन जाता था।

वह अपना चावल नापता था और उसको उस बरतन में डाल कर सुबह सुबह आग पर रख देता था। फिर वह ताश खेलता था। जब दिन के 11 बजते थे और अगर वह जीत जाता था तो वह अपना सारा चावल खा लेता था।

¹³ The Cardplayer – a folktale from Reunion, Southern Africa. Adapted from the book “Indian Ocean Folktales: Madagascar, Comoros, Mauritius, Reunion, Seychelles”. By Germain Elizabeth. Retold by Christian Bard

शाम को फिर वह चावल बनने के लिये रखता था और बन जाने पर खा लेता था। अगर वह अपना सुबह का चावल 11 बजे खत्म नहीं कर पाता था तो वह उसको शाम के लिये रख देता था। इस तरह से उसको ताश खेलने के लिये ज़्यादा समय मिल जाता था।

एक दिन एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा — “जाओ और भगवान से मिलो और उससे कहो “भगवान तुम धरती पर आओ और इस ताश खेलने वाले को ले जाओ। यह हम सबको बहुत तंग करता है। यह सड़क पर हर जगह ताश खेलता है।

यह बच्चों और बड़ों को एक जैसा ही समझता है। अच्छा होगा अगर भगवान आयें और इसको ले जायें।”

दूसरा आदमी बोला — “ठीक है। मैं जा कर मिलता हूँ।

सो वह भगवान के पास गया और बोला — “भगवान मैं आपसे मिलने आया हूँ। हमारे यहाँ धरती पर एक आदमी है जो सबको ताश खेल कर बहुत तंग करता है। वह एक तरफ ऊपर जाता है और दूसरी तरफ नीचे जाता है। उससे सब परेशान रहते हैं। वह लोगों को काम नहीं करने देता।

कोई बच्चा बेचारा पैसे ले कर कुछ खरीदने के लिये दूकान जाता है तो वह उसको ताश खेलने के लिये बहका लेता है और फिर उसको हरा कर उसके सारे पैसे ले लेता है।”

भगवान ने पूछा — “क्या उसका नाम ताश खेलने वाला है?”

वह आदमी बोला — “जी हाँ।”

भगवान ने कहा — “वह आयेगा, वह आयेगा। मैं देखने जाता हूँ कि क्या यह सब सच है?”

सो भगवान ने एक दिन “होली घोस्ट”¹⁴ और सेन्ट पीटर¹⁵ से बात की और कहा “चलो इस ताश खेलने वाले को देख कर आते हैं। अगर जो कुछ यह आदमी कह रहा है सच हुआ तो हमको उसको धरती से हटाना ही पड़ेगा।”

सो वे तीनों धरती की तरफ चल दिये। जब वे उस ताश खेलने वाले के घर पहुँचे तो शाम के पाँच बज रहे थे। उन्होंने उससे पूछा — “क्या तुम्हीं ताश खेलने वाले हो?”

वह बोला — “हाँ, क्यों?”

वे बोले — हमने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है पर अब देर हो गयी है। क्या तुम हमको रात को खाना और ठहरने की जगह दे सकते हो?”

“हाँ हाँ क्यों नहीं। पर तुम देख रहे हो न कि मेरा घर कितना छोटा सा है। यह मेरा खाना बनाने का बरतन है और मेरे पास बस एक डिब्बा ही चावल है। तुम लोग इधर सो सकते हो, जैसे भी चाहो और हम सब यह चावल मिल कर खायेंगे। ठीक है?”

¹⁴ Holy Ghost – Christianity believes in Trinity – Father, Son and the Holy Ghost (Holy Spirit), each person itself being God.

¹⁵ Saint Peter (Simon Peter) was one of the 12 Apostles of Jesus Christ and in popular culture is depicted holding the key of Kingdom of Heaven, sitting at the Pearly Gates to allow entry in the Kingdom of Heaven.

तीनों एक साथ बोले — “ठीक है। हमें मंजूर है।”

सो उस ताश खेलने वाले ने अपना चावल नापने वाला बरतन उठाया। उससे नाप कर चावल लिये, उनको धोया और फिर उस बरतन को आग पर रख दिया। बाकी सब लोग बात करने लगे।

जब चावल पक गये तो उन तीनों ने पूछा — “और वह चावल? क्या वह पका हुआ चावल नहीं है?”

बरतन में चावल पक कर उठ रहा था। सो वह ताश खेलने वाला उठ कर गया। उसने उसमें से दो प्याले चावल निकाले। अब वह बरतन चावल से आधा भरा हुआ था।

उसने देखा और बोला — “यह चावल तो बन गया है पर अभी बहुत सारा चावल बाकी है। मैं इसको कैसे परसूँ?”

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने थोड़ा सा चावल ले लिया और उसे खाने लगे। चारों का पेट भर गया।

वे तीनों उससे बहुत खुश थे। उन्होंने कहा कि वह नम्रता में, अच्छे व्यवहार में और यह देखने में कि दूसरे लोगों ने ठीक से खाया है या नहीं सबसे पहले नम्बर पर आता है।” और वे सब सोने के लिये लेट गये।

अगली सुबह जब वे उठे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले से पूछा कि वे उसको कितने पैसे दे दें। वह बोला — “जो थोड़ा बहुत तुम लोगों ने यहाँ खाया पिया। इसके अलावा तुम लोग इतनी छोटी

सी जगह में सोये। और मेरे ख्याल से तो ठीक से सो भी नहीं पाये होंगे। उस सबका उनको पैसा देने की कोई जरूरत नहीं थी।”

वे तीनों बोले — “नहीं नहीं, हम लोगों ने पेट भर कर खाया और पूरा पूरा ठीक से सोये।”

वह ताश खेलने वाला बोला कि वह भी ठीक से सोया।

भगवान ने कहा — “अगर तुम हमसे कोई पैसा नहीं ले रहे हो तो मुझसे अपने लिये कोई मेरी कोई कृपा ही माँग लो।”

वह बोला — “कृपा? मैं तुमसे क्या कृपा माँगू?”

भगवान बोले — “कुछ भी। जो भी तुम्हारी इच्छा हो। मैं तुमको सन्तोष दूँगा।”



ताश खेलने वाला बोला — “तुम वह बैन्च देख रहे हो न? तो तुम्हारी कृपा के लिये मैं तुमसे यह माँगता हूँ कि जो कोई भी उस पर बैठे वह वहीं चिपक जाये।”

भगवान बोले — “ठीक है ऐसा ही होगा।”

होली घोस्ट बोले — “तुम मुझसे भी कुछ माँग लो।”

“अरे तुमसे भी? मैं तुमसे क्या माँगू? ठीक है तुम मुझको यह दो कि जब कोई मेरे दरवाजे में हो और वह दरवाजे का सहारा ले कर खड़ा हो तो वह वहाँ से फिर हिल भी न सके। वह वहीं अटक जाये।”

होली घोस्ट बोले — “ठीक है जैसा तुम चाहो। ऐसा ही होगा।”

अब सेन्ट पीटर की बारी थी। उसने कहा — “अब मेरा नम्बर है। बोलो, तुम मुझसे क्या माँगते हो?”



ताश खेलने वाला बोला — “तो क्या तुम तीनों मेरे ऊपर कृपा करने वाले हो? ठीक है। यह तो बहुत ही अच्छा है। तुम वह सन्तरे का पेड़ देख रहे हो न? अगर कोई उस पेड़ पर मुझसे बिना पूछे चढ़े तो वह उस पर से तब तक नीचे न आ सके

जब तक मैं न कहूँ।”

सेन्ट पीटर बोले — “ठीक है ऐसा ही होगा।”

इस तरह तीनों उस ताश खेलने वाले को तीन वरदान दे कर चले गये। कुछ समय बाद भगवान ने अपने मृत्यु दूत¹⁶ को बुलाया और उसको धरती पर से ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा।

मृत्यु दूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले के घर पहुँचा। वहाँ जा कर उसने ताश खेलने वाले से कहा कि उसको भगवान ने बुलाया है।

ताश खेलने वाले ने पूछा — “पर उसने मुझे क्यों बुलाया है?”

¹⁶ Translated for the words “Death Angel”

“यह तो मुझे नहीं मालूम नहीं पर उन्होंने मुझे तुम्हें लाने के लिये भेजा है।”

ताश खेलने वाले ने कुछ सोचा और उससे अपने घर के सामने पड़ी बैन्च पर बैठने के लिये कहा कि वह वहाँ बैठे और वह अभी घर से तैयार हो कर आता है।

सो मृत्यु दूत बाहर उसकी बैन्च पर बैठ गया और ताश खेलने वाला घर के अन्दर तैयार होने चला गया। कुछ देर बाद वह तैयार हो कर आया और बोला — “चलो उठो मैं तैयार हूँ।”

मृत्यु दूत ने उस बैन्च से उठने की कोशिश की पर वह तो उससे उठ ही नहीं सका। वह तो उससे चिपक गया था। उसने बहुत कोशिश की पर वह तो वहाँ से किसी तरह हिल भी नहीं पा रहा था।

उसने उससे कहा — “अरे यह क्या। मैं तो यहाँ से उठ ही नहीं पा रहा। कोई मुझे यहाँ से उठाओ।”

ताश खेलने वाला बोला — “जब तक तुम मुझसे यह वायदा नहीं करोगे कि तुम मुझे भगवान के पास नहीं ले जाओगे मैं तुमको यहाँ से नहीं उठाऊँगा।”

मृत्यु दूत को उससे यह वायदा करना ही पड़ा तभी ताश खेलने वाले ने उसको वहाँ से उठाया। वहाँ से उठ कर वह सीधा भगवान के पास गया।

भगवान ने पूछा — “कहाँ है वह ताश खेलने वाला?”

मृत्यु दूत ने भगवान से जा कर सारा हाल बताया तो भगवान ने पूछा कि कि तुम वहाँ उस बैन्च के ऊपर बैठे ही क्यों थे ।

वह बोला — “उसने मुझसे बैठने के लिये कहा था इसलिये मैं वहाँ बैठ गया था । मुझे क्या पता था कि उस पर बैठ कर मैं वहाँ चिपक जाऊँगा । और उसके बाद मैं वहाँ पर चिपक गया । मैं तो उठ ही नहीं सका ।

जब मैंने उससे यह वायदा किया कि मैं उसको अपने साथ नहीं ले जाऊँगा तब कहीं जा कर उसने मुझे उस बैन्च से आजाद किया । ”

“ठीक है अब तुम फिर से जाओ और उस ताश खेलने वाले को यहाँ ले कर आओ । मैं और कुछ नहीं जानता । मैं तुमको हुकुम देता हूँ और तुम मेरे हुकुम का पालन करो । ”

सो वह फिर ताश खेलने वाले के पास गया तो ताश खेलने वाला उसको फिर से आया देख कर बोला — “अरे तुम यहाँ फिर से?”

“हाँ भगवान ने मुझसे कहा है कि अबकी बार मैं तुमको ले कर आऊँ । और इस बार कोई सौदा नहीं । ”

ताश खेलने वाले ने मुँह बना कर कहा — “हूँह, कोई सौदा नहीं । ”

मृत्यु दूत बोला — “अबकी बार तुमको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा । ”

ताश खेलने वाला बोला — “मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा।”

“क्या तुम मेरे साथ नहीं जा रहे हो? यह नहीं हो सकता। तुमको चलना ही पड़ेगा। उन्होंने मुझसे तुमको साथ लाने के लिये कहा है। कल तुमने मुझे उस छोटी सी बैन्च पर पकड़ लिया था। मैंने भगवान को सब बता दिया तो उन्होंने मुझे फिर से यहाँ भेज दिया।”

“ठीक है तुम यहाँ बैठो।”

“क्या? उस बैन्च पर?”

“हाँ हाँ। ठीक है। तुम बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो घर के बाहर मेरे दरवाजे पर खड़े हो कर मेरा इन्तजार करो मैं अभी आया।”

मृत्यु दूत उसके दरवाजे के सहारे खड़ा हो गया। जैसे ही वह वहाँ खड़ा हुआ तो वह तो वहाँ दरवाजे से चिपक गया।

ताश खेलने वाला बोला — “यह दरवाजा तुमको पकड़ कर रखेगा तब तक मैं ज़रा ताश खेल कर आया।”

मृत्यु दूत बोला — “ताश खेलने से क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने कहा न कि कोई सौदा नहीं बस तुमको चलना है।”

ताश खेलने वाला बोला — “मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रहा। तुम यहीं ठहरो।”

यह सुन कर मृत्यु दूत तो पागल सा हो गया। उसने अपने आपको वहाँ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की “कोई सौदा नहीं ओ

ताश खेलने वाले । मुझे जाने दो । मैं जा कर भगवान को बता दूँगा तो वह मुझे फिर से तुमको लाने के लिये यहाँ भेज देंगे ।”

ताश खेलने वाले ने दरवाजे से कहा — “देखो यह यहाँ खड़ा है इसको जाने मत देना ।”

फिर वह मृत्यु दूत से बोला — “अगर तुम मुझे ले कर जाना चाहते हो तो मैं तुमको यहाँ से नहीं जाने दूँगा ।”

मृत्यु दूत ने फिर कहा — “अच्छा तो मुझे तो जाने दो । मैं भगवान से जा कर कहूँगा कि मेरे साथ क्या हुआ था । और मैं तुमको भी नहीं ले जाऊँगा ।”

ताश खेलने वाला बोला — “अगर मैं तुमको छोड़ दूँगा तो तुम मुझे ले जाओगे । मुझे मालूम है ।”

मृत्यु दूत फिर बोला — “नहीं मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुमको नहीं ले जाऊँगा । लेकिन अब तो मुझे जाने दो ।”

ताश खेलने वाला बोला — “अगर तुम मुझे नहीं ले जाओगे तो मैं तुमको छोड़ देता हूँ । जाओ यहाँ से चले जाओ । अब तुम दरवाजे से चले जाओ ।”

मृत्यु दूत ने दरवाजा छोड़ दिया और वह वहाँ से चला गया । वह वहाँ से भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने पूछा — “अरे यह क्या तुम फिर बिना ताश खेलने वाले के आ गये?”

“मैं बताता हूँ कि मेरे साथ क्या हुआ ।”

“मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तुम वहाँ गये होगे और जा कर उसकी बैन्च पर बैठ गये होगे।”

“नहीं इस बार उसके दरवाजे ने मुझे पकड़ लिया। मैं उसके दरवाजे में फँस गया।”

भगवान ने पूछा — “क्या मैंने तुमको उसके दरवाजे में फँसने के लिये भेजा था। मैंने तुमको ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा था। फिर जाओ और ताश खेलने वाले को ले कर आओ। अबकी बार कोई सौदा नहीं। बस उसको ले कर आओ। उसको धरती पर से उठा कर लाना है। समझे।”

मृत्यु दूत बोला — “मैं क्या करता मैं उसके दरवाजे में फँस गया था। मैंने उससे छूटने की बहुत कोशिश की पर मैं छूट ही नहीं सका सो मुझे उससे वायदा करना पड़ा कि मैं उसको नहीं ले जाऊँगा ताकि कम से कम मैं उसके दरवाजे से तो छूट सकूँ।”

भगवान बोले — “ठीक है अब भागो यहाँ से। यह आखिरी बार है। उसको ले कर आओ। अबकी बार ख्याल रखना।”

सो वह फिर धरती पर गया और फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँच कर उसको आवाज लगायी। ताश खेलने वाला बोला —

“अरे मृत्यु दूत तुम फिर से यहाँ? अब तुम्हें क्या चाहिये?”

“भगवान ने मुझे यहाँ तुमको ले आने के लिये भेजा है। अबकी बार तुमको चलना ही है।”

“नहीं, मैं नहीं जा रहा।”

“नहीं का क्या मतलब है तुमको चलना ही है।”

“अच्छा तो तुम उस छोटी सी बैन्च पर बैठो...।”

“क्या? उस बैन्च पर?”

“अच्छा तो दरवाजे के पास खड़े हो जाओ।”

“क्या, और फिर वहाँ से हिल भी न सको। तुम मेरे साथ अभी चलो।”

सो वह बाहर ही खड़ा रहा। न तो वह बैन्च पर बैठा और न ही वह दरवाजे के पास खड़ा हुआ। वहीं पास में सन्तरे का पेड़ था और उस पर पके सन्तरे लगे हुए थे।”

ताश खेलने वाला बोला — “अगर हम वाकई भगवान के पास जा रहे हैं तो मुझे क्या करना होगा। ऐसा करो, देखो इस पके सन्तरे के पेड़ को देखो। जब तक मैं तैयार होता हूँ तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ और वहाँ से कुछ सन्तरे ही तोड़ लो। चार सन्तरे तोड़ लेना – दो अपने लिये और दो भगवान के लिये।”

सो मृत्यु दूत उस पेड़ पर चढ़ गया। जब वह ऊपर तक पहुँच गया तो ताश खेलने वाला बोला — “ठीक है अब मैं ताश खेलने जा रहा हूँ।”

“क्या? मैं नीचे उतर रहा हूँ फिर साथ साथ चलते हैं।”

“नहीं तुम नीचे नहीं उतर रहे।”

“क्या? मैं नीचे नहीं उतर रहा?”

“हाँ, तुम नीचे नहीं उतर रहे। तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी ताश खेलने जा रहा हूँ। जब मैं तय कर लूँगा कि मुझे क्या करना है तब मैं तुम्हें बताऊँगा तब हम चलेंगे। और तभी मैं तुम्हें यहाँ से आजाद करूँगा।”

मृत्यु दूत बोला — “ओ ताश खेलने वाले मैं तुमसे कह रहा हूँ कि मुझे जाने दो। पहले तुमने मुझे इस छोटी सी बैन्च पर पकड़ा, फिर तुमने मुझे दरवाजे में पकड़ा और अब तुमने मुझे इस सन्तरे के पेड़ पर पकड़ रखा है।

यह सब तो ठीक है, पर यह तो बताओ तुम्हें चाहिये क्या? भगवान ने मुझसे कहा है कि तुम यहाँ लोगों को परेशान करते हो सो मैं तुमको यहाँ से ले जाऊँ।”

ताश खेलने वाला बोला — “मैं किसी को परेशान नहीं करता। मैं भगवान को भी परेशान नहीं करता। मैं किसी को परेशान नहीं करता सिवाय अपने साथ ताश खेलने वालों के।”

“ठीक है, तो मुझे तो जाने दो। मैं तुमको बता रहा हूँ कि मैं जा रहा हूँ।”

ताश खेलने वाला बोला — “नहीं, तुम मुझे साथ ले कर नहीं जा सकते। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। तुम मुझे ले जाओगे इसी लिये तो मैं तुम्हें यहाँ से जाने नहीं दे सकता।”

पर बाद में मृत्यु दूत को ताश खेलने वाले से एक वायदा करना पड़ा कि अगर उसने उसको छोड़ दिया तो वह उसको ले कर नहीं

जायेगा और भगवान के पास जा कर उनको यह बतायेगा कि वह धरती पर कैसे पकड़ा गया था।

ताश खेलने वाला राजी हो गया तो उसने उसको सन्तरे के पेड़ पर से नीचे बुला लिया। मृत्यु दूत वहाँ से किसी तरह नीचे उतर कर सन्तरे ले कर भगवान के पास चला गया।

जब वह भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने उससे पूछा — “कहाँ है वह ताश खेलने वाला?”

मृत्यु दूत बोला — “भगवन, इस बार उसने मुझे अपने सन्तरे के पेड़ में पकड़ लिया और फिर मुझे वह पेड़ छोड़ ही नहीं रहा था। फिर भी उसने आपके लिये दो सन्तरे भेजे हैं और कहा है कि मैं इनको आपको दे दूँ।”

भगवान बोले — “मुझे किसी सन्तरे की जरूरत नहीं है। और मैंने तुमको वहाँ सन्तरे तोड़ने के लिये भी नहीं भेजा था। क्या मैंने तुमसे यह कहा था कि तुम उसके सन्तरे के पेड़ पर चढ़ो? मुझको तो बस वह ताश खेलने वाला चाहिये और कुछ नहीं।”

सो वह अबकी बार चौथी बार धरती पर गया। इस बार उसको बहुत सावधान रहना था। भगवान ने भी उससे सावधान रहने के लिये कहा और कहा कि अगर वह सावधान नहीं रहा तो वह उसको वहाँ ले कर नहीं आ पायेगा।

सो वह फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँचा और जा कर उसको आवाज लगायी।

ताश खेलने वाला बाहर निकल कर आया और बोला — “अरे मृत्यु दूत तुम फिर से? तुम यहाँ फिर से वापस क्यों आ गये?”

मृत्यु दूत बोला — “आज तो तुमको जाना ही पड़ेगा। भगवान ने मुझसे कहा है कि आज मैं तुमको ले कर ही आऊँ। इस बार कोई सौदा नहीं – न कोई बैंच और न कोई दरवाजा और न ही कोई सन्तरे का पेड़। बस तुमको मेरे साथ चलना है।”

ताश खेलने वाले ने कहा — “ठीक है, अगर मुझको जाना ही है तो मुझे पहले अपने ताश के पत्ते ले आने दो।”

सो वह अन्दर गया और अपना ताश निकल कर ले लाया। उनको उसने अपनी जेब में रख लिये। फिर उसने एक थैला उठाया उसको अपने कन्धे पर डाला और वह इस तरह उस मृत्यु दूत के पीछे पीछे चल दिया।¹⁷

चलते चलते रास्ते में कुछ दूरी पर ताश खेलने वाले को ग्रैन ड्याब¹⁸ दिखायी दे गया तो वह बोला — “ज़रा रुको ओ मृत्यु दूत, मैं चलते चलते इसके साथ एक ताश की एक बाजी¹⁹ खेल लूँ।”

मृत्यु दूत बोला — “मुझे बहुत देर हो जायेगी।”

¹⁷ The final episode in Germain Elizabeth's "Cardplayer" tale exemplifies cultural creolization. European tradition contributes Cardplayer's expulsion from Heaven. African tradition puts a familiar frame around it. Hell is forgotten in favor of two-sided conflict between the "little man" and the God. Elizabeth says "Cardplayer" earns the way to Heaven

¹⁸ Gran Dyab

¹⁹ Translated for the word "Deal"

ताश खेलने वाला गिड़गिड़ा कर बोला — “बस एक मिनट, केवल एक बाजी।”

कह कर वह ग्रेन ड्याब के पास पहुँच गया और उससे बोला — “आजा एक बाजी खेलते हैं।”

ग्रेन ड्याब बोला “क्या?”

ताश खेलने वाला बोला — “आओ ग्रेन ड्याब, एक बाजी खेलते हैं। अगर तुम जीत जाओ तो तुम मुझे खा लेना।”

उसने सोचा “देखो वह मृत्यु दूत खड़ा है। या तो मैं उसके साथ चला जाऊँगा या फिर ग्रेन ड्याब के मुँह में चला जाऊँगा। क्या फर्क पड़ता है।”

वह फिर ग्रेन ड्याब से बोला — “सो अगर तुम जीत गये तो तुम मुझे खा लेना और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे 12 छोटे शैतान दे देना।”

ग्रेन ड्याब बोला — “यकीनन। पर ओ ताश खेलने वाले, क्या तुम समझते हो कि तुम मेरे साथ ताश का खेल सकते हो?”

फिर भी दोनों ताश खेलने बैठे तो ताश खेलने वाले ने ग्रेन ड्याब को हरा दिया। अपने समझौते के अनुसार ग्रेन ड्याब गया और 12 छोटे शैतान ला कर उसको दे दिये।

उसने उन शैतानों को ले कर अपने थैले में डाला, थैले को अपने कन्धे पर डाला और मृत्यु दूत से बोला — “देखा तुमने? मैं कोई ऐसे ही झक नहीं मार रहा था। चलो चलते हैं।”

वे लोग स्वर्ग के दरवाजे पर आ पहुँचे थे। दरवाजे पर सेन्ट पीटर खड़ा हुआ था। मृत्यु दूत सेन्ट पीटर से बोला — “मैं इस ताश खेलने वाले को पकड़ लाया हूँ।”

सेन्ट पीटर ने पूछा — तुम ताश खेलने वाले को ले आये?”
“हाँ यह रहा।”

“बहुत अच्छे, उसको अन्दर ले आओ।” सो ताश खेलने वाला अन्दर गया।

सेन्ट पीटर ने पूछा — “यह तुम्हारे कन्धे पर क्या है?”

मृत्यु दूत बोला — “यह इसकी जीत है। जब यह यहाँ आ रहा था तो इसको इसने ताश की एक बाजी खेल कर जीता था।”

सेन्ट पीटर बोले — “क्या इसने कुछ जीत लिया?”

मृत्यु दूत बोला — “हाँ, यह ग्रेन ड्याव के साथ खेला और उससे इसने 12 छोटे शैतान जीत लिये।”

सेन्ट पीटर ने फिर कहा — “यहाँ कोई शैतान नहीं आ सकता।”

“वह तो ठीक है। पर मैंने इनको जीता है। अब मैं इनका क्या करूँ? ये मेरे हैं। तुम मुझे इनको रखने के लिये कहीं किसी कोने में कोई जगह दे दो।”

सेन्ट पीटर बोले — “मैंने तुमसे कहा न कि यहाँ अन्दर कोई शैतान नहीं आ सकता। तुम इनको बाहर छोड़ सकते हो।”

ताश खेलने वाला बोला — “ठीक है। तब मैं इनको यहाँ दरवाजे के पास ही छोड़ देता हूँ।” और उसने अपना थैला दरवाजे के पास ही रख दिया।

वह वहीं बैठ गया और सेन्ट पीटर को घूरने लगा। कुछ पल उसको देखने के बाद वह बोला — “क्या वह तुम्हीं नहीं थे जो कुछ समय पहले मुझसे रात के लिये खाना और ठहरने की जगह माँगने आये थे? तुम लोग तीन थे।”

सेन्ट पीटर बोले — “हाँ, उनमें एक मैं भी था।”

ताश खेलने वाला बोला — “तुम तीनों भी एक चीज़ थे। तुम तीनों मेरे घर आये। मैं तुम लोगों को अन्दर ले गया। मैंने चावल बनाये। तुम लोगों को खाने के लिये दिये। तुम लोगों को सोने के लिये जगह दी।

और अब जब मैं यहाँ आया हूँ तो मैं अन्दर नहीं आ सकता क्योंकि मेरे पास कुछ छोटे शैतान हैं? तुम तो वाकई अजीब चीज़ हो।”

उसने अपने शैतानों का थैला उठाया और वहाँ से चला गया क्योंकि सेन्ट पीटर उसको उन शैतानों के साथ अन्दर नहीं आने दे रहा था।



4 बोतल में बन्द मौत

सिपाही और मौत जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश के सिसिली टापू पर कही सुनी जाती है।

एक बार एक बहुत ही अमीर और दयालु सराय वाला था जिसने अपनी सराय के आगे एक साइन बोर्ड लगा रखा था। उस साइन बोर्ड के ऊपर लिखा था “मेरी सराय में आने वाले को खाना मुफ्त”।

सो सारा दिन लोग उसकी सराय में आते रहते थे और वह सब को मुफ्त खाना खिलाता रहता था।

एक बार जीसस और उनके 12 अपोसिल्लस भी उस शहर में आये। उन्होंने भी वह साइन बोर्ड पढ़ा तो सेन्ट थोमस²⁰ बोला — “मालिक, जब तक मैं अपनी आँखों से देख न लूँ और अपने हाथों से छू कर महसूस न कर लूँ तब तक मैं किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता। सो चलिये अन्दर चलते हैं।”

सो जीसस और सब अपोसिल्लस उस सराय के अन्दर गये। उन्होंने सबने वहाँ खूब खाया और खूब पिया। सराय के मालिक ने भी उनका शाही स्वागत किया।

²⁰ St Thomas was one of the four disciples of Jesus who has written one of the four Books of the New Testament Bible. See the list of Jesus’ disciples at the end of this book.



वहाँ से चलने से पहले सेन्ट थोमस बोला — “ओ भले आदमी, तुम मालिक से कोई चीज़ क्यों नहीं माँग लेते?”

उस सराय वाले ने जीसस से कहा — “मालिक, मेरे घर में एक अंजीर का पेड़ है पर मैं उस पेड़ की एक भी अंजीर नहीं खा पाता।

जैसे ही वे पकती हैं बच्चे आ जाते हैं और वे सारी अंजीरें खा जाते हैं। अब मैं यह चाहता हूँ कि आप ऐसा कुछ कर दें कि जो भी उस पेड़ पर चढ़े वह मेरी इजाज़त के बिना नीचे न आ सके।”

जीसस ने कहा — “ऐसा ही होगा।” और उस पेड़ को उन्होंने वैसा ही आशीर्वाद दे दिया।

अगली सुबह पहले चोर का उस पेड़ से हाथ चिपक गया, दूसरे का पैर चिपक गया और तीसरे का तो सिर ही दो डालियों के बीच फँस गया और वह उसे उनमें से निकाल ही नहीं सका।

जब सराय वाले ने उनको इस तरह पेड़ से चिपके देखा तो उनको सबको नीचे उतारा और उनकी अच्छी पिटायी करके उनको छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में सबको पेड़ के इस गुण के बारे में पता चल गया कि जो कोई पेड़ को छुएगा वह उससे चिपक जायेगा। तो छोटे बच्चे तो उस पेड़ के पास आते ही नहीं थे बड़े भी उस पेड़ से दूर रहने लगे।

अब सराय वाला आराम से रह सकता था और अपने पेड़ की अंजीरें खा सकता था।

इस तरह सालों गुजर गये। वह पेड़ बूढ़ा हो गया। अब उस पर फल नहीं आते थे। सराय वाले ने एक लकड़ी काटने वाले को उस पेड़ को गिराने के लिये बुलाया।

उसने पेड़ गिरा दिया तो सराय वाले ने उससे पूछा — “क्या तुम मेरे लिये इस पेड़ की लकड़ी की एक बोतल बना सकते हो जो इतनी बड़ी हो कि उसमें एक आदमी घुस जाये?”

“हाँ हाँ क्यों नहीं।” और लकड़ी काटने वाले ने उसके लिये उस पेड़ की लकड़ी की उतनी बड़ी एक बोतल बना दी।

उस बोतल में उस पेड़ की लकड़ी के जादुई गुण आ गये थे - वह यह कि जो कोई भी उस बोतल में घुसता तो वह बिना सराय वाले की इजाज़त के बाहर ही नहीं आ सकता था।

अब वह सराय वाला भी बूढ़ा हो चला था। एक दिन मौत उसको लेने के लिये आया तो वह आदमी बोला — “हाँ हाँ क्यों नहीं। चलो चलते हैं। पर तुम्हारे साथ जाने से पहले क्या तुम मेरा एक काम करोगे?”

मेरे पास एक बोतल है जिसमें शराब भरी हुई है। पर उसमें एक मक्खी पड़ गयी है। अब उस शराब को मैं पी ही नहीं सकता। क्या तुम उसमें कूद कर उस मक्खी को निकाल दोगे ताकि मैं मरने से पहले उस बोतल में से कम से कम एक घूँट शराब तो पी चलूँ।”

“अरे तुम मुझसे बस इतना सा काम करवाना चाह रहे हो? यह तो कुछ भी नहीं मैं अभी करता हूँ।”

कह कर मौत उस बोतल में कूद पड़ा। उसके बोतल में कूदते ही सराय वाले ने उस बोतल के मुँह पर डाट²¹ लगा दी।

फिर वह मौत से बोला — “बस अब तुम मेरे पास रहोगे और तुम कभी भी इसमें से निकल नहीं पाओगे।”

मौत तो अब सराय वाले के पंजे में फँस चुका था सो दुनियाँ में अब किसी को मौत ही नहीं आ रही थी। सब ज़िन्दा थे। अब सब जगह पैरों तक लम्बी सफेद दाढ़ी वाले लोग दिखायी पड़ते थे।

यह बात अपोसिल्लस ने भी देखी और जीसस को इसका इशारा किया। जीसस ने आखिर उस सराय वाले के पास जा कर बात करने का इरादा किया।

वह उस सराय वाले के पास गये और उससे कहा — “भाई, क्या तुम सोचते हो कि यह ठीक है कि तुमने मौत को इस तरह से सालों से बन्द कर रखा है?”

ज़रा उन लोगों के बारे में सोचो जो बूढ़े होने की वजह से कमजोर हो गये हैं या जो अपनी ज़िन्दगी को घसीट रहे हैं और बिना मौत के ठीक नहीं हो सकते कि उन बेचारे लोगों का क्या होगा?”

²¹ Translated for the word “Cork”

सराय वाले ने जवाब दिया — “मालिक, क्या आप यह चाहते हैं कि मैं मौत को बाहर निकाल दूँ? तब आप मुझसे वायदा कीजिये कि मरने के बाद आप मुझे स्वर्ग भेज देंगे तभी मैं मौत को इस बोतल में से बाहर निकालूँगा।”

जीसस ने सोचा अब मैं क्या करूँ? अगर मैं उसको इस बात के लिये मना कर दूँ तब तो मैं बहुत बड़ी मुसीबत में फँस जाऊँगा क्योंकि मौत इस बोतल में ही बन्द रह कर किसी को भी नहीं आ पायेगी और यह ठीक नहीं है इसलिये जीसस ने कहा — “जैसा तुम चाहते हो ऐसा ही होगा।”

जीसस से यह वायदा ले कर सराय वाले ने वह बोतल खोल दी और मौत को आजाद कर दिया।

इसके बाद सराय वाले को कुछ और साल ज़िन्दा रहने दिया गया। बाद में मौत फिर वापस आयी और उसको स्वर्ग ले गयी। इस तरह सराय वाला मौत को बोतल में बन्द करके स्वर्ग चला गया।



5 आज्ञा मेरे थैले में कूद जा²²

सिपाही और मौत जैसी कहानियों के इस संग्रह में यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

इस बात को बहुत साल हो गये जब निओलो²³ के बंजर पहाड़ों में एक पिता अपने 12 बेटों के साथ रहता था।

एक बार वहाँ अकाल पड़ा तो पिता ने बेटों से कहा —
“बच्चों, मैं अब तुम्हें रोटी नहीं खिला सकता। तुम लोग अब बाहर जाओ जहाँ मुझे पूरा विश्वास है कि तुम बजाय घर के वहाँ ज़्यादा खुश रहोगे।”

यह सुन कर उसके 11 बड़े बेटे तो घर छोड़ कर जाने के लिये तैयार हो गये पर उसका बारहवाँ बेटा जो सबसे छोटा था और लँगड़ा था रोने लगा। वह बोला — “मुझ जैसा अपंग आदमी बाहर की दुनियाँ में निकल कर क्या कमायेगा पिता जी।”

पिता बोला — “बेटा, रो नहीं। तुम भी अपने भाइयों के साथ जाओ और जो ये लोग कमायेंगे उसी में से ये तुमको भी देंगे।”

सो उसके बारहों बेटों ने आपस में एक दूसरे से वायदा किया कि वे एक साथ रहेंगे और वे वहाँ से चले गये।

²² Jump into My Sack (Story No 200) – a folktale from Italy from its Corsica area.

Adapted from the book: “Italian Folktales”, by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

²³ Niolo – name of a place in Italy

वे सारा दिन चलते रहे। फिर दूसरे दिन भी चलते रहे। पर छोटा वाला हमेशा ही अपने लँगड़ेपन की वजह से उनसे सबसे पीछे रह जाता था।

तीसरे दिन सबसे बड़े भाई ने कहा — “हमारा यह सबसे छोटा भाई फ्रान्सिस²⁴ हमेशा ही पीछे रह जाता है। यह अब हमारे लिये एक परेशानी है।

हम लोग आगे आगे चल कर इसको यहीं पीछे सड़क पर छोड़ देते हैं। यह इसके लिये भी अच्छा रहेगा क्योंकि हो सकता है कि कभी कहीं से इसको कोई दयालु मिल जाये और इस पर दया करके इसको अपने साथ ले जाये।”

यह सोच कर वे सब अपने छोटे भाई का इन्तजार किये बिना ही आगे चल दिये। वे बोनीफ़ेसियो²⁵ पहुँचने तक रास्ते में जो भी मिला उसी से भीख माँगते चले गये।

बोनीफ़ेसियो पहुँच कर उनको एक नाव बन्दरगाह पर लगी हुई दिखायी दे गयी। नाव देख कर सबसे बड़ा भाई बोला — “क्या हो अगर हम इस नाव पर चढ़ जायें और सारडीनिया²⁶ चले जायें। हो सकता है कि वहाँ हमारे शहर से कम ज़ोर का अकाल हो।”

सो वे सब भाई उस नाव में चढ़े और उन्होंने नाव खे दी। जब वे खाड़ी के बीच में पहुँचे तो वहाँ एक भयानक तूफ़ान आ गया।

²⁴ Francis – name of the 12th and the youngest brother

²⁵ Bonifacio – name of a place in Italy

²⁶ Sardinia – name of a place in Italy

उस तूफान में नाव के टुकड़े टुकड़े हो गये और ग्यारहों भाई समुद्र में डूब गये ।

इस बीच छोटा अपंग फ्रान्सिस चलते चलते बहुत थक गया । और जब उसने अपने भाइयों को अपने आस पास नहीं देखा तो वह चिल्लाने लगा, रोने लगा और पागल सा हो गया ।

लेकिन वह क्या करता वह वहीं सड़क के किनारे ही बैठ गया । वह चलते चलते थक गया था सो बैठते ही सो गया ।

उस जगह की परी वहीं एक पेड़ पर बैठी थी । वह सब कुछ देख रही थी । जैसे ही फ्रान्सिस सो गया वह पेड़ से नीचे उतरी । उसने कुछ खास तरह के पत्ते इकट्ठे किये, उनकी पुल्टिस बनायी और फ्रान्सिस की लँगड़ी टॉग पर लगा दिया । उसकी टॉग तुरन्त ही ठीक हो गयी ।

फिर उसने एक गरीब बुढ़िया का रूप रख लिया और एक आग जलाने वाली लकड़ी के गड्ढर पर बैठ गयी । वहाँ बैठ कर वह उसके जागने का इन्तजार करने लगी ।

कुछ देर बाद फ्रान्सिस जागा तो लँगड़ाते हुए उठा पर उसने देखा कि वह तो अब लँगड़ा नहीं था वह तो अब और दूसरों की तरह से ठीक से चल सकता था । तभी उसकी निगाह लकड़ी के गड्ढर पर बैठी एक बुढ़िया पर पड़ी ।

उसने उससे पूछा — “मैम, क्या आपने यहाँ आस पास में किसी डाक्टर को देखा?”

“डाक्टर, तुम्हें डाक्टर क्यों चाहिये?”

“मैं उसको धन्यवाद देना चाहता हूँ। क्योंकि जब मैं सो रहा था तो जरूर ही यहाँ कोई बड़ा डाक्टर आया होगा जिसने मेरी लँगड़ी टॉग ठीक कर दी।”

यह सुन कर वह बुढ़िया बोली — “वह मैं थी जिसने तुम्हारी टॉग ठीक की। क्योंकि मैं ऐसे बहुत सारे पत्तों के बारे में जानती हूँ जिनसे लँगड़ी टॉग भी ठीक की जा सकती है।”

यह सुन कर फ्रान्सिस बहुत खुश हो गया और उसने बुढ़िया के गले में अपनी बाँहें डाल दीं और उसके दोनों गाल चूम लिये।

“मैं आपको किस तरह से धन्यवाद दूँ मैम? मैं आपका यह लकड़ी का गड्ढर ले चलता हूँ।”

कह कर वह उस लकड़ी के गड्ढर को उठाने के लिये नीचे झुका पर जब वह ऊपर उठा तो उसने देखा कि वहाँ पर तो कोई बुढ़िया नहीं थी बल्कि वहाँ तो एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी थी। उसने हीरे जवाहरात पहने हुए थे और उसके सफेद बाल उसके कन्धे पर से कमर तक आ रहे थे।

उसने गहरे नीले रंग की सुनहरे तारों से कढ़ाई की गयी पोशाक पहन रखी थी। उसके जूतों पर टखने की जगहों पर दो चमकीले कीमती पत्थर लगे हुए थे। फ्रान्सिस तो कुछ बोल ही नहीं सका और उस परी के पैरों पर पड़ गया।

परी बोली — “उठो फ्रान्सिस उठो। मुझे मालूम है कि तुम मुझे धन्यवाद देना चाहते हो। मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम कोई सी दो इच्छाएँ मुझे बताओ मैं उनको तुरन्त ही पूरा कर दूँगी। ध्यान रखना कि मैं केनो झील की परियों की रानी²⁷ हूँ।

लड़के ने कुछ सोचा फिर बोला — “मुझे एक ऐसा थैला चाहिये जिसको जब भी मैं जिसके लिये भी कहूँ कि तू उसे खींच ले तो वह उसे खींच ले।”

“तुमको ऐसा थैला मिल जायेगा। अब तुम अपनी दूसरी इच्छा बताओ।”

लड़का बोला — “मुझे एक ऐसी डंडी चाहिये जो वही करे जो मैं उससे करने के लिये कहूँ।”

“तुमको ऐसी डंडी भी मिल जायेगी।” कह कर वह परी गायब हो गयी और फ्रान्सिस के पैरों के पास एक थैला और एक डंडी पड़े हुए थे।



खुश होते हुए फ्रान्सिस ने उन दोनों चीजों को जाँचना चाहा। उसको इस समय भूख लगी थी सो वह बोला “एक भुना हुआ तीतर²⁸ मेरे थैले में”। उसके यह कहते के साथ ही एक पूरा भुना हुआ तीतर उसके थैले में आ पड़ा।

²⁷ Queen of the Fairies of Lake Creno

²⁸ Translated for the word “Partridge” – see its picture above.

“रोटी भी।” और एक डबल रोटी आ कर थैले में गिर पड़ी। और “एक बोतल शराब भी।” और एक बोतल शराब भी उसके थैले में आ गयी। इस तरह फ्रान्सिस ने बहुत दिनों बाद पेट भर कर स्वादिष्ट खाना खाया।

अगले दिन वह मरियाना²⁹ आ गया जहाँ कोरसिका³⁰ और कौन्टीनैन्ट के बहुत मशहूर जुआ खेलने वाले मिलने के लिये आये हुए थे।

अब फ्रान्सिस के पास तो कोई पैसा था नहीं सो उसने कहा “100 हजार काउन मेरे थैले में आ जाओ।” और उसका थैला 100 हजार काउन के सिक्कों से भर गया।

यह खबर तो सारे मरियाना में जंगली आग की तरह फैल गयी कि मरियाना में सैन्टो फ्रान्सेस्को³¹ से एक बहुत ही अमीर राजकुमार आया है। उसके पास एक ऐसा थैला है जो पैसों से कभी खाली नहीं होता। उस समय शैतान खास करके मरियाना की तरफ था।

उसने एक बहुत सुन्दर नौजवान का रूप रखा हुआ था और वह ताश के खेल में सबको हरा रहा था और जब वे हार जाते थे और उनका पैसा खत्म हो जाता था तो वह उनकी आत्मा खरीद लेता था।

²⁹ Mariana – name of a place in Italy

³⁰ Corsica – name of a place in Italy

³¹ Santo Francesco – name of a place and the name of Francisco too, Francis got famous in Mariana town

इस अमीर परदेसी के बारे में सुन कर जो वहाँ के लोगों में सैन्टो फ्रान्सैस्को के नाम से मशहूर हो गया था वह शैतान इसके पास भी आया और बोला — “ओ भले राजकुमार, मुझे अपनी बहादुरी के लिये माफ करना पर जुआ खेलने वाले की हैसियत से तुम इतने मशहूर हो चुके हो कि मैं तुम्हारे साथ जुआ खेलने से अपने आपको रोक नहीं सका।”

फ्रान्सिस बोला — “तुम मुझे शरमिन्दा कर रहे हो। सच तो यह है कि मैं तो ताश का कोई खेल खेलना जानता ही नहीं। मैंने तो कभी ताश के पत्ते भी अपने हाथ में नहीं पकड़े। फिर भी मुझे तुम्हारे साथ ताश खेल कर बड़ी खुशी होगी।

मैं केवल तुमसे खेल सीखने के लिये खेलूँगा। और मुझे यकीन है कि तुम जैसे गुरु के साथ खेल सीख कर मैं खेल में मास्टर हो जाऊँगा।”

शैतान को लगा कि उसका उस राजकुमार से मिलना सफल हो गया सो जब वह वहाँ से चला तो वह उसको विदा कहने के लिये नीचे झुका तो जानबूझ कर उसने अपनी टॉग आगे बढ़ा कर अपना आधा खुर³² उस राजकुमार को दिखा दिया।

“ओह मेरे भगवान।” फ्रान्सिस ने अपने आपसे कहा — “तो यह तो शैतान खुद था जिसने मेरे पास आ कर मुझे इज्जत दी। अच्छा है, अब वह अपने बराबर वाले से मिलेगा।”

³² Translated for the word “Cloven Hoof”. It seems that it is the mark of a Satan in Italy.

जब वह अकेला रह गया तो उसने थैले से बढ़िया खाना लाने के लिये कहा।

अगले दिन वह कसीनो³³ पहुँचा तो देखा कि एक जगह पर बहुत सारे लोग बैठे हुए हैं। फ्रान्सिस उनके बीच से उनको धक्का देता हुआ उस भीड़ के अन्दर घुस गया। वहाँ जा कर उसने क्या देखा कि एक नौजवान नीचे पड़ा हुआ है और उसकी छाती से खून बह रहा है।

एक आदमी बोला — “यह आदमी जुआरी था। इसने बेचारे ने जुए में अपना सारा पैसा खो दिया और फिर एक मिनट पहले ही इसने अपने सीने में छुरा भोंक लिया।”

वहाँ बैठे सारे जुआरियों के चेहरे उतरे हुए थे पर फ्रान्सिस ने देखा कि उन सब दुखी लोगों के बीच में एक आदमी मुस्कुरा रहा था। वह आदमी वह शैतान था जो फ्रान्सिस से मिलने आया था।

शैतान बोला — “जल्दी करो। इस बदकिस्मत आदमी को यहाँ से बाहर निकालो और खेल चालू रखो।”

कुछ लोग उस आदमी के शरीर को वहाँ से उठा कर बाहर ले गये और दूसरे लोगों ने खेलने के लिये फिर से ताश के पत्ते उठा लिये।

फ्रान्सिस जिसको ताश के पत्ते हाथ में पकड़ने तक नहीं आते थे उस दिन अपना सब कुछ हार गया। दूसरे दिन उसको खेल का कुछ

³³ Casino where people go for gambling

पता चला पर फिर भी वह पहले दिन से ज़्यादा हार गया। पर तीसरे दिन वह खेल का मास्टर हो गया पर उस दिन तो वह इतना ज़्यादा हारा कि लोगों को लगा कि आज तो वह बरबाद ही हो गया।

पर कोई भी नुकसान उसके लिये ज़्यादा नहीं था और वह नुकसान उसको परेशान भी नहीं कर रहा था क्योंकि उसके पास तो उसका थैला था जिसमें से वह चाहे जितना पैसा निकाल सकता था।

पिछले तीन दिनों में वह इतना हार चुका था कि शैतान ने सोचा कि जरूर ही वह दुनियाँ का सबसे अमीर आदमी होगा तभी तो वह इतना हार चुका था और उसके माथे पर शिकन तक नहीं थी।

पर वह भी इस बात पर तुला हुआ था कि वह उसको कंगाल बना कर ही छोड़ेगा।

वह फ्रान्सिस को एक तरफ ले गया और उससे बोला — “ओ भले राजकुमार, मैं तुमको बता नहीं सकता कि मैं तुम्हारी इस बदकिस्मती पर कितना दुखी हूँ पर फिर भी मेरे पास तुम्हारे लिये एक खुशखबरी है। तुम मेरी बात को ध्यान से सुनोगे तो जितना तुमने खोया है उसमें से कम से कम आधा तो तुम वापस ले ही लोगे।”

फ्रान्सिस ने पूछा — “कैसे?”

शैतान ने इधर उधर देखा और उसके कान में फुसफुसाया — “तुम अपनी आत्मा मुझे बेच दो।”

फ्रान्सिस बोला — “आह, सो मेरे लिये तुम्हारी यह सलाह है ओ शैतान? चलो तो मेरे थैले में कूद जाओ।”

यह सुन कर शैतान ने वहाँ से भागने की कोशिश की पर वह उस थैले से तो बच नहीं सकता था। वह सिर के बल उस थैले में गिर पड़ा।

फ्रान्सिस ने थैला बन्द किया और अपनी डंडी से बोला — “अब इसकी अच्छी तरह से पिटायी करो।” बस उसकी डंडी ने शैतान की ज़ोर ज़ोर से पिटायी करनी शुरू कर दी।

शैतान का शरीर मरोड़ खाने लगा, वह चिल्लाने लगा, फ्रान्सिस को गालियाँ देने लगा — “मुझे इस थैले में से निकालो। इस डंडी को रोको। तुम तो मुझे मार ही डालोगे।”

“क्या सचमुच में? तुम यहीं मरोगे। बस वही तुम्हारे लिये सबसे बड़ा नुकसान होगा।” और वह डंडी उसको पीटती रही।

तीन घंटे की पिटायी के बाद फ्रान्सिस बोला — “आज के लिये तुम्हारे लिये बस इतना ही काफी है।”

शैतान ने बड़ी कमजोर आवाज में पूछा — “मुझे यहाँ से आजाद करने की तुम क्या कीमत लोगे?”

“तुम ध्यान से मेरी बात सुनो। अगर तुम अपनी आजादी चाहते हो तो तुम उन सब आत्माओं को छोड़ दो जिन्होंने तुम्हारी वजह से आत्महत्या की है।”

“ठीक है सौदा पक्का रहा।”

“तब बाहर आ जाओ। पर साथ में यह भी याद रखना कि अगर तुमने कुछ भी गड़बड़ी की तो मैं तुमको किसी भी समय जब भी मैं चाहूँ फिर से पकड़ सकता हूँ।”

शैतान तो अपने वायदे से वापस जाने की हिम्मत ही नहीं कर सकता था। वह तुरन्त ही जमीन के नीचे जा कर गायब हो गया और तुरन्त ही कुछ लोगों को ले कर बाहर आ गया। उन सबके चेहरे पीले पड़े हुए थे और उनकी आँखें बीमार जैसी लग रही थीं।

फ्रान्सिस उन लोगों से बोला — “दोस्तों, तुम लोगों ने अपने आपको जुआ खेल कर बरबाद कर लिया था और फिर तुम्हारे पास अपने आपको मारने के अलावा और कोई रास्ता नहीं रह गया था।

मैं तुम लोगों को इस बार तो वापस ले आया पर अगली बार शायद मैं ऐसा न कर सकूँ इसलिये तुम लोग मुझसे वायदा करो कि तुम लोग अब से जुआ नहीं खेलोगे।”

सब लोग एक आवाज में बोले — “हाँ हाँ हम वायदा करते हैं कि हम आज से जुआ नहीं खेलेंगे।”

“बढ़िया। लो तुम सब लोग एक एक हजार काउन लो और शान्ति से अपने अपने घर जाओ और ईमानदारी से अपनी रोटी कमाओ खाओ।”

वे नौजवान खुश हो कर वहाँ से चले गये। कुछ के परिवार उनकी मौत पर रो रहे थे, कुछ लोग अपने माता पिता के बुरे कामों की वजह से उनकी मौत पर दुखी थे।

यह देख कर फ्रान्सिस को अपने बूढ़े पिता की याद आ गयी सो वह भी अपने गाँव चल दिया। रास्ते में उसको एक लड़का मिला जो बड़ी नाउम्मीदी में अपने हाथ मल रहा था।

फ्रान्सिस ने उससे पूछा — “क्या बात है नौजवान कैसे हो? क्या तुम ये दुखी चेहरे ही बेचते हो? एक दर्जन ऐसे चेहरे कितने के दोगे?”

लड़का बोला — “मैं हँस नहीं सकता। मैं क्या करूँ।”



“क्यों क्या बात है।”

लड़का बोला — “मेरे पिता एक लकड़हारे का काम करते हैं और वह अकेले ही परिवार का पालन पोषण करते हैं। आज सुबह वह एक चेस्टनट के पेड़ से गिर पड़े। इससे उनकी एक बाँह टूट गयी है।

मैं डाक्टर को बुलाने के लिये शहर दौड़ा गया पर क्योंकि हम गरीब हैं। मैं उसको पैसे नहीं दे सकता था सो उसने आने से मना कर दिया।”

“क्या इसी वजह से तुम दुखी हो रहे हो। शान्त हो जाओ। चलो मेरे साथ चलो मैं देखता हूँ।”

“क्या आप डाक्टर है?”

“नहीं मैं तो डाक्टर नहीं हूँ पर मैं उस डाक्टर को बुला सकता हूँ जिसने तुमको आने से मना कर दिया। क्या नाम है उस डाक्टर का?”

“डाक्टर पैनक्रेज़ियो³⁴।”

“ठीक है। डाक्टर पैनक्रेज़ियो, आओ मेरे थैले में कूद जाओ।” उसी समय वह डाक्टर अपने सब औजारों के साथ उसके थैले में आ गया।

फिर फ्रान्सिस बोला — “ओ डंडी अपनी पूरी ताकत के साथ इसको पीटो।” बस उस डंडी ने उस डाक्टर को अपनी पूरी ताकत के साथ पीटना शुरू कर दिया।

कुछ देर बाद फ्रान्सिस ने उस डाक्टर से पूछा — “क्या तुम इस लड़के के पिता का इलाज बिना कोई पैसा लिये करोगे?”

“जो भी आप कहें।”

“तो ठीक है थैले से बाहर आ जाओ।” बाहर आते ही डाक्टर उस लकड़हारे के घर की तरफ भाग गया।

फ्रान्सिस फिर अपने रास्ते चल दिया और कुछ ही दिनों में अपने गाँव आ पहुँचा। वहाँ तो अब पहले से भी ज़्यादा लोग भूखे मर रहे थे।

वह अपने थैले से बार बार कहता रहा — “भुना हुआ मुर्गा और शराब की बोतल थैले में कूद जा।”

³⁴ Pancrazio – name of the Doctor

फ्रान्सिस ने उस थैले से गाँव के सब लोगों को खूब खाना खिलाया और सब लोगों ने बहुत दिन बाद बिना पैसे के इतना स्वादिष्ट खाना खाया।

वह यह सब उन लोगों के लिये तब तक करता रहा जब तक वहाँ अकाल चला। जब वहाँ की दशा कुछ सुधर गयी तब उसने वह सब बन्द कर दिया क्योंकि इससे लोगों का आलसीपन बढ़ता था।

X X X X X X X

पर क्या तुम सोचते हो कि वह खुश था? नहीं। वह अपने 11 भाइयों की कोई खबर न मिलने पर बहुत दुखी था। वह बहुत दिनों से उनको भूला हुआ था क्योंकि वे उसको उस अपंग हालत में अकेला छोड़ कर भाग गये थे।

फिर उसने उनको बुलाने की कोशिश की — “भाई जौन आ मेरे थैले में कूद जा।”

उसके यह कहते ही उसके थैले में कुछ हिला। फ्रान्सिस ने उसको खोला तो उसमें उसको हड्डियों का एक ढेर मिला।

फिर वह बोला — “भाई पौल आ मेरे थैले में कूद जा।” फिर एक और हड्डियों का ढेर थैले में आ पड़ा।

इस तरह उसने अपने ग्यारहों भाइयों के नाम ले ले कर उनको अपने थैले में बुलाया पर हर बार एक हड्डियों का ढेर उस थैले में

आ कर गिर जाता। अब उसको कोई शक नहीं था कि उसके सारे भाई एक साथ ही मर गये थे।

यह देख कर फ्रान्सिस बहुत दुखी था। उसका पिता भी उसको अकेला छोड़ कर मर गया था। अब बूढ़े होने की उसकी बारी थी।

अब बस उसकी एक ही आखिरी इच्छा थी कि वह केनो झील की परियों की रानी को एक बार फिर से देख ले जिसने उसको इतना अमीर बनाया था।

सो वह उसी जगह चल दिया जहाँ वह उसको पहली बार मिला था। वह वहाँ इन्तजार करता रहा करता रहा पर वह परी नहीं आयी।

वह बड़ी प्रार्थना भरी आवाज में बोला — “कहाँ हो तुम ओ परियों की रानी। मेहरबानी करके तुम एक बार मेरे सामने और आओ। मैं तुमको फिर से देखे बिना तो मर भी नहीं सकता।”

रात होने लगी थी और परी के आने का उसको कोई संकेत भी दिखायी नहीं दे रहा था बल्कि उसने देखा कि परी की जगह तो उसके सामने से उसकी मौत चली आ रही थी।

उसके एक हाथ में काला झंडा था और दूसरे हाथ में उसका हल जैसा पेड़ काटने वाला एक औजार था।

वह फ्रान्सिस के पास आयी और बोली — “ओ बूढ़े, क्या तुम अपनी ज़िन्दगी से थक नहीं गये हो? क्या तुम पहाड़ों पर काफी नहीं

चढ़ लिये हो? क्या तुमने दुनियाँ के सारे काम काफी नहीं कर लिये हैं और क्या तुम अब मेरे साथ आने के लिये तैयार नहीं हो?”

बूढ़े फ्रान्सिस ने कहा — “ओ मौत । भगवान तुमको बनाये रखे । तुम ठीक कहती हो । मैंने दुनियाँ में बहुत कुछ देख लिया बल्कि हर चीज़ देख ली है । मैं सब चीज़ों से सन्तुष्ट हो गया हूँ पर तुम्हारे साथ आने से पहले मैं किसी को विदा कहना चाहता हूँ । मेहरबानी करके मुझे एक दिन की मोहलत और दो । ”

“अगर तुम किसी नास्तिक की तरह से मरना नहीं चाहते तो तुम अपनी प्रार्थना कर लो और फिर जल्दी से मेरे पीछे पीछे आ जाओ । ”

“मेहरबानी करके सुबह जब तक मुर्गा बोलता है मुझे तब तक की मोहलत दे दो । ”

“नहीं । ”

“अच्छा तो एक घंटा और, बस । ”

“एक मिनट भी ज़्यादा नहीं । ”

फ्रान्सिस बोला — “क्योंकि तुम इतनी बेरहम हो तो आओ मेरे थैले में कूद जाओ । ”

मौत डर के मारे काँप गयी । उसकी सारी हड्डियाँ चरचरा उठीं और वह फ्रान्सिस के थैले में जा कर गिर पड़ी ।

उसी समय वह केनो झील की परियों की रानी वहाँ प्रगट हो गयी। वह अभी भी उतनी ही शानदार लग रही थी जितनी वह तब लग रही थी जब वह उसको पहली बार मिली थी।

फ्रान्सिस बोला — “मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ ओ परियों की रानी।”

फिर वह मौत से बोला — “मेरा काम हो गया अब तुम मेरे थैले में से बाहर निकल जाओ और मुझे ले चलो।”

परी बोली — “फ्रान्सिस तुमने कभी भी अपनी उन ताकतों का गलत इस्तेमाल नहीं किया जो मैंने तुमको दी थीं। तुमने हमेशा ही अपने थैले और डंडी का बहुत अच्छा इस्तेमाल किया। अगर तुम मुझे अपनी कोई इच्छा बताओ तो इस समय मैं तुम्हारी वह इच्छा भी पूरी करूँगी।”

फ्रान्सिस बोला — “नहीं, अब मेरी कोई इच्छा नहीं है।”

“क्या तुम सरदार बनना चाहते हो?”

“नहीं।”

“क्या तुम राजा बनना चाहते हो?”

“नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये।”

परी ने फिर पूछा — “अब क्योंकि तुम बूढ़े हो गये हो क्या तुम को तन्दुरुस्ती और जवानी चाहिये?”

“अब मैंने तुमको देख लिया है तो अब मैं शान्ति से मरने के लिये तैयार हूँ।”

“अच्छा विदा फ्रान्सिस । पर मरने से पहले यह थैला और यह डंडी जला दो ।” और यह कह कर परी गायब हो गयी ।

फ्रान्सिस ने एक बड़ी सी आग जलायी । कुछ देर के लिये अपने शरीर को गरम किया और अपना थैला और डंडी उस आग में फेंक दी ताकि उनका कोई गलत इस्तेमाल न कर सके ।

अब तक मौत एक झाड़ी के पीछे छिपी हुई खड़ी थी । सुबह हो गयी थी । मुर्गा चिल्लाया — “कुँकडू कू ।” पर फ्रान्सिस उसकी आवाज नहीं सुन सका क्योंकि मौत ने उसको बहरा कर दिया था ।

मौत बोली — “देखो मुर्गा बोल रहा है ।”

कह कर उसने अपने औजार से उसको मारा और उसके मरे हुए शरीर को अपने साथ ले कर वहाँ से चली गयी ।



Names of Jesus' 12 Apostles –

1. Simon Peter (brother of Andrew) - He was active in bringing people to Jesus – Bible writer
2. James (son of Zebedee and other brother of John) also called James the Greater
3. John of Zebedee and brother of James) – Bible writer
4. Andrew (brother of Simon Peter) – He was active in bringing people to Jesus
5. Philip of Bethsaida
6. Thomas (Didymus)
7. Bartholomew (Nathaniel) – He was one of the disciples to whom Jesus appeared at the Sea of Tiberias after his Resurrection. He was witness of the Ascension
8. Matthew (Levi) of the Capernaum
9. James (son of Alphaeus), also called “James the Lesser” Bible writer
10. Simon the Zealot (the Canaanite)
11. Thaddaeus-Judas (Lebbaeus) – brother of James the Lesser and brother of Matthew (Levi) of the Capernaum
12. Judas Iscariot who also betrayed him

The New Testament says the end of only two Apostles – Judas who betrayed Jesus and then killed himself; and James the son of Zebedee who was executed by Herod.

Soldier and Death Like Stories

1. Soldier and Death
2. The Card Player
3. Card Player
4. Death Shut in a Bottle
5. Jump In To My Sack

Books in “One Story Many Colors” Series

1. Cat and Rat Like Stories
2. Tom Thumb Like Stories
3. Six Swans Like Stories
4. Three Oranges Like Stories
5. Snow White and the Seven Dwarves Like Stories
6. Sleeping Beauty Like Stories
7. Pig King Like Stories
8. Puss in Boots Like Stories
9. Hansel and Gratel Like Stories
10. Red Riding Hood Like Stories
11. Cinderella Like Stories
12. Cinderella in the World
13. Rumpelstiltskin Like Stories
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Frog Princess Like Stories
17. Lion and Man Like Stories
18. Soldier and Death Like Stories

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

- 1 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-1
- 2 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-2
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई-मीडियम पर सोसायटी ऑफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

- 1 जंजीवार की लोक कथाएँ — 10 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — 45 लोक कथाएँ — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

- 1 रैवन की लोक कथाएँ-1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — प्रभात प्रकाशन
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2 — प्रभात प्रकाशन
- 4 शेवा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
- 6 बंगाल की लोक कथाएँ — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टेक्नोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

- 1 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html>
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html>
- 3 रैवन की लोक कथाएँ-1
<http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html>
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-2
<http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html>
- 5 रैवन की लोक कथाएँ-3
<http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html>
- 6 इटली की लोक कथाएँ-1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाएँ-2

<http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html>

8 इटली की लोक कथाएँ-3

<http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html>

9 इटली की लोक कथाएँ-4

<http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html>

10 इटली की लोक कथाएँ-5

<http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html>

11 इटली की लोक कथाएँ-6

<http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyani.html>

12 इटली की लोक कथाएँ-7

<http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html>

13 इटली की लोक कथाएँ-8

<http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html>

14 इटली की लोक कथाएँ-9

<http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html>

15 इटली की लोक कथाएँ-10

<http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html>

16 जंजीवार की लोक कथाएँ

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html

17 चालाक ईकटोमी

http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगर्नौट डाट इन पर उपलब्ध हैं

<https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596>

1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाएँ

2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाएँ

Facebook Group

<https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks>

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में एम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी एड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में एम एल एस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट ऑफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोटी के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट ऑफ़ सर्जन अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू एस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर ऑफ़ लाइब्रेरी एंड इनफ़ॉर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी - www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रही हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला - कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाएँ हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी - हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगी।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाएँ सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक 1200 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको “देश विदेश की लोक कथाएँ” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा

मई 2018